चन्दामामा
नवम्बर १९९६

CHANDAMAMA

भारत में
सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड
कॉमिक्स
अग्निपुत्र अभय और तूतकयूता
महाबली शाका और एनीमल्स क्वीन
राजन इकबाल
मोटू पतलू और खूनी दरिन्दा
चाचा भतीजा और नागिन का बदला
प्राण
बिल्लू और जोज़ी
डायमण्ड कॉमिक्स डाइजेस्ट
फैन्टम-60
मैन्ड्रेक-47
जेम्स बाण्ड-50
नई अमर चित्रकथायें (मूल्य प्रत्येक 15/-)
• सम्राट गुप्त • रुकमणी परिणय • साक्षी गोपाल • राम के पूर्वज • लोकमान्य तिलक • सती और शिव • मंगल पांडे • डा. भीमराव आम्बेडकर • पंचतंत्र • नल दमयन्ती

पोलियो-मुक्त भारत

लक्ष्य की प्राप्ति दूर नहीं
अगला क़दम होगा

राष्ट्रीय असंक्रमीकरण के दिन:

दिसंबर ७, १९९६

जनवरी १८, १९९७

माता पिताओं से विनती

शिशु की तबीयत के ठीक न होते हुए भी दस्त होते हुए भी इसके पहले भी शिशु को पोलियो टीका-द्रव्य दिये जा चुके हों, फिर भी

सौ फ़ी सदी सुरक्षा सुनिश्चित करने

अपने बच्चों को (पाँच साल से कम)
असंक्रमीकरण की कक्षिका पर ले जाएँ

दो अतिरिक्त मौखिक पोलियो

टीका-द्रव्य लेने

राष्ट्रीय असंक्रमीकरण के दिन

हमारे देश का भविष्य हमारे
शिशुओं के स्वस्थ जीवन
पर आधारित है।

पोलियो मुक्त भारत का सृजन करने हम अपने प्रयत्न ज़ारी रखें।

२००० ए.डि. तक

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

लड़कियों की शिक्षा - जन्मसिद्ध अधिकार

हाल ही में हमने अध्यापक-दिवस मनाया। साथ ही विश्व शिक्षा-दिवस भी। इन दोनों अवसरों पर, हमारे नेताओं ने अपने भाषणों में शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। उनमें से बहुत-से वक्ताओं ने लड़कियों की शिक्षा पर ज़ोर दिया। कहा भी कि यह उनका जन्मसिद्ध अधिकार है।

बहुत वर्षों के पहले महात्मा गाँधी ने कहा "जब एक आदमी को शिक्षा दी जाती है तो वह उस आदमी तक ही सीमित है। किन्तु जब एक स्त्री को शिक्षा दी जाती है तब पूरे परिवार व देश तक यह व्याप्त है।" गाँधीजी स्त्रियों के हक़ों व उद्धार के लिए लड़नेवाले महान नेता थे।

यह उद्धार क्यों? सौ सालों के पहले बहुत कम लड़कियाँ पाठशाला जाती थीं। उनका कार्य-क्षेत्र घर तक ही सीमित होता था। उन्हें रसोई बनाने व सिलाई आदि घरेलू कामों में ही प्रशिक्षण दिया जाता था, जिससे विवाह के बाद वे सफल पत्नियाँ बन सकें और अपने घरेलू काम सुचारु रूप से कर सकें।

स्कूलों और कालेजों में भी स्त्रियों की शिक्षा का प्रबंध था किन्तु उनके माँ-बाप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें भेजने से हिचकिचाते थे। उनका ड़र था कि समान रूप से शिक्षित युवक से अपनी पुत्री का विवाह करने के लिए उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा दहेज देना पड़ेगा।

भाग्यवश, परिस्थितियों में परिवर्तन हुए। अब युवती हर क्षेत्र में पुरुष का मुक़ाबला करने की स्थिति में है। फिर भी कम आमदनी वाले परिवारों की लड़कियाँ ग़रीबी के कारण पढ़ नहीं पातीं, शिक्षित नहीं हो पातीं। संविधान में जो अधिकार स्त्री को दिये गये हैं, उन्हें पाने के लिए वह लड़ती रहे और आगे बढ़ती रहे।

वर्ष : ५०   नवंबर १९९६   अंक : २

एक प्रति : रु. ६/-   वार्षिक चन्दा : रु ७२/-

समाचार-विशेषताएँ
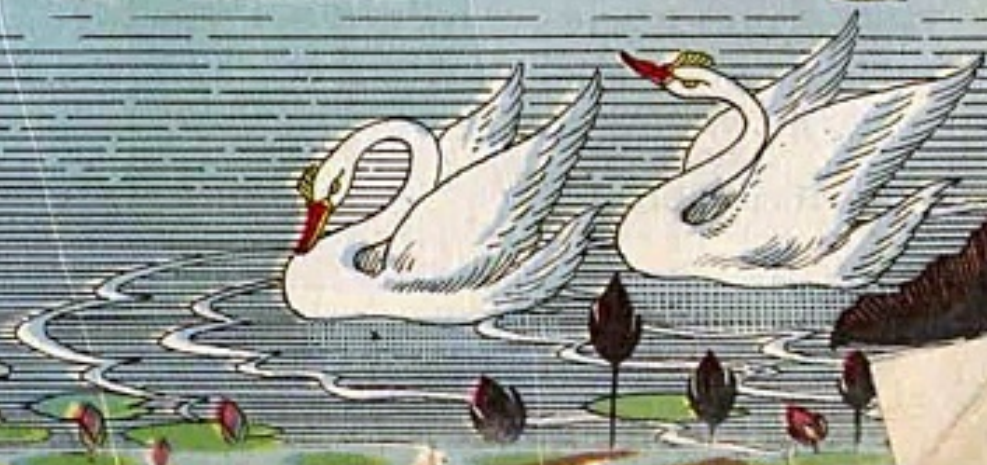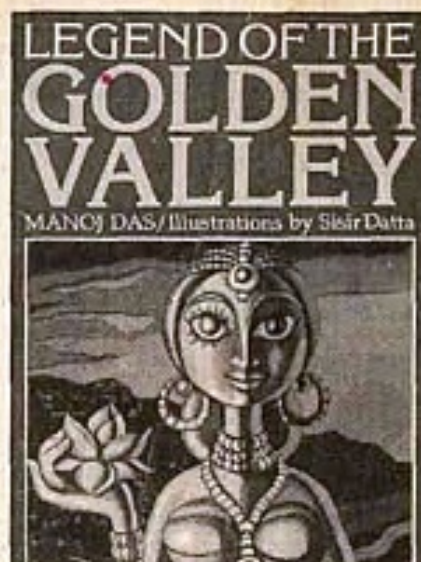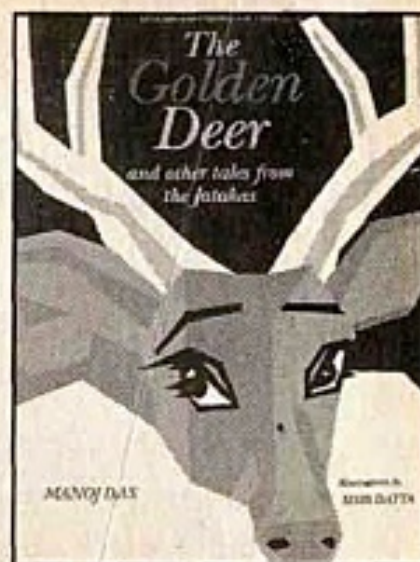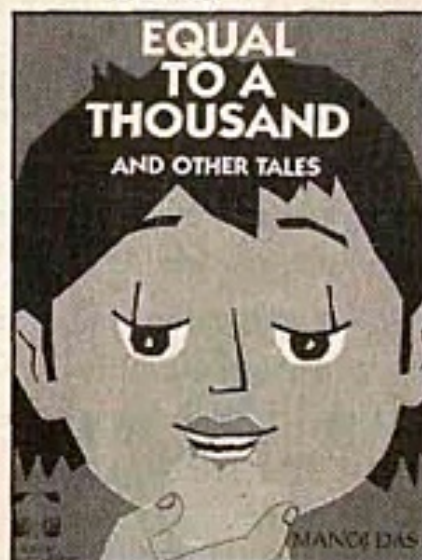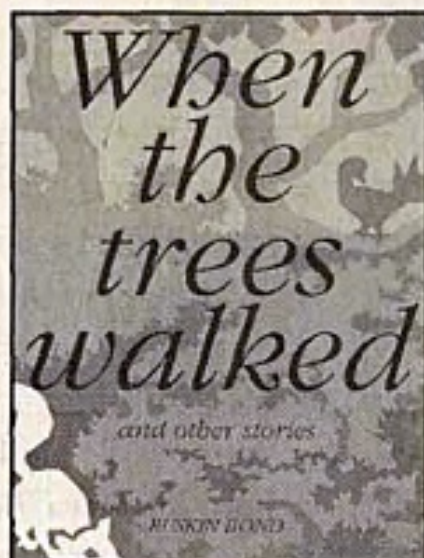
भारत-सि टि बि टि

सितंबर के आरंभ-काल में संयुक्त राष्ट्र संघ के जनरल असेंब्ली ने सिटिबिटि की स्वीकृति के लिए सदस्य देशों की एक विशिष्ट सभा बुलायी। पिछले जून मास में जेनेवा में नि:शस्त्रीकरण के लिए प्रत्येक सभा का समावेश हुआ। चर्चाएँ हुई, किन्तु एकमत से स्वीकृति प्राप्त नहीं हो पायी। उसका पर्यवसान ही है यह सिटिबिटि। 'कांप्रहेन्सिव टेस्ट बान ट्रीटी' है विशद अणु आयुध परीक्षण निषेध समझौता।

इस प्रस्ताव की स्वीकृति के लिए जनरल असेंब्ली में आस्ट्रेलिया ने दस्तावेज़ पेश किया। भारत के अलावा कुछ और देशों ने भी इसका विरोध किया। सितंबर, १० को सदस्य देशों ने अत्यधिक बहुसंख्या से इसे पारित किया। १८५ सदस्य देशों में से १५८ देशों ने इसके अनुकूल मत दिये। भारत, भूटान, लिबिया देशों ने इसका विरोध किया। पाँच देशों ने समावेश में भाग ही नहीं लिया। शेष देश तटस्थ रह गये। भारत इस प्रस्ताव का क्यों विरोध कर रहा है, उसकी आपत्तियाँ क्या हैं?

संसार के पाँच अग्रदेश हैं : अमेरीका, इग्लैंड, रूस, चीन, फ्राँस। इन पाँचों देशों के पास अणु अस्त्र हैं। इनके अलावा ४४देश अणु अस्त्र बनाने की शक्ति- सामर्थ्य रखते हैं। ऐसे देशों में भारत भी एक है। इसके पूर्व संपन्न अणु अस्त्रों के नि:शस्त्रीकरण समावेश में संयुक्त राष्ट्र संघ ने नि:शस्त्रीकरण के समझौते के लिए तीन लक्ष्यों की घोषणा की। एक-कोई भी देश हो, आगे से अणु अस्त्र को तैयार न करे। दो-अब जिन देशों के पास अणु अस्त्र हैं, उन्हें निर्धारित अवधि के अंदर मिटा दें। तीन - अंतर्राष्ट्रीय शांति की रक्षा हो। मतलब यह कि ऐसे वातावरण की सृष्टि की जाए, जिससे अणु शस्त्रों का उपयोग न हो।

भारत का मानना है कि उक्त तीनों लक्ष्यों की सफलता में यह समझौता काम नहीं आयेगा, सहायता नहीं पहुँचायेगा। जो पाँच अग्रदेश अन्य देशों को अणु अस्त्रों को न बनाने का आदेश दे रहे हैं, वे अपने पास सुरक्षित अणु अस्त्रों के निर्मूलन की दिशा में उत्साह दिखा नहीं रहे हैं। इस दिशा में उनकी गति धीमी है। वे देश चाहते हैं कि उनके पास, कुछ हद तक ही सही, ये अणु अस्त्र हों। चीन और फ्राँस ने तो कुछ समय के पहले भी इन अणु अस्त्रों की परीक्षा की। भारत ने इसलिए अपना अभिप्राय नित्संकोच बता दिया। पहले लक्ष्य की ही पूर्ति नहीं हो पायी। भारत ने स्पष्ट बता भी दिया कि इन पाँचों देशों के पास जो अणु अस्त्र हैं, उनके निर्मूलन के संबंध में समझौते के इस दस्तावेज़ में कोई समय निर्धारित नहीं किया गया। इन दोनों लक्ष्यों की पूर्ति के बिना तीसरा लक्ष्य - अंतर्राष्ट्रीय शांति असंभव है, भारत का यह मानना है।

समझौते के इस दस्तावेज़ में सदस्य देशों के हस्ताक्षरों के लिए जनरल असेंब्ली और तीन सालों तक प्रतीक्षा करेगा। भारत ने स्पष्ट किया कि दस्तावेज़ में यद्यपि हस्ताक्षर नहीं किया, फिर भी अणु अस्त्र बनाने का उसका इरादा नहीं है। भारत अणु अस्त्रों को बनाने की शक्ति रखता है, उसके पास इन अस्त्रों को बनाने के साधन हैं, किन्तु वह आज तक शांतिपूर्ण प्रयोजनों के लिए ही उपयोग में इन्हें लाता रहा। इस सत्य पर ध्यान दिया जाए।

हमें देखना होगा कि जिन-जिन देशों ने अणु अस्त्र के निषेध के दस्तावेज़ में दस्तख़त नहीं किया, उनपर संयुक्त राष्ट्र संघ १९९९ में क्या कार्रवाई करेगा।

प्रणाम

कालिंद पवनपुर का नया ग्रामाधिकारी बनकर आया। उसे अपने ओहदे का बड़ा ही गर्व था। उसने अपने नौकर रतन से कहा "जब कभी मैं बाहर जाता हूँ, तब तुम मेरे साथ-साथ रहना। जो नहीं जानते कि मैं कौन हूँ, उन्हें मेरे बारे में बताते रहना।" रतन ने हाथ जोड़कर विनयपूर्वक कहा "मालिक, मुझ जैसे साधारण आदमी को सब लोग जानते हैं, आपको न जानने का सवाल ही नहीं उठता। आप तो ग्रामाधिकारी हैं। अब तक सभी को यह समाचार मिल चुका होगा। आपके बारे में मालूम हो गया होगा।"

कालिंद की बातों से रतन जान गया कि उसका कैसा स्वभाव है। इसलिए जब कभी भी वह उसके साथ गाँव में जाता रहता, इस बात का ख्याल रखता था। कालिंद को देखते ही बहुत-से लोग प्रणाम करते थे। जो प्रणाम नहीं करता, उससे रतन कहता कि ये साहब कौन हैं और इन्हें प्रणाम करो। वे तब कालिंद को प्रणाम करते थे। फिर भी अगर कोई प्रणाम करने से झिझकता या भूल जाता तो वह कालिंद के पीछे खड़े होकर प्रणाम करने के लिए इशारा करता रहता था।

केवल रोहित ही ऐसा आदमी था, जो कालिंद को प्रणाम करता ही नहीं था। वह आत्माभिमानी था। कुछ लोगों का तो कहना था कि वह अब्वल दर्जे का घमंडी है। एक दिन कालिंद से बीच रास्ते में मिला, पर प्रणाम किये बिना ही वह आगे बढ़ गया।

"कौन है यह? उसने क्या मुझे नहीं देखा? क्या उसे मालूम नहीं कि मैं कौन हूँ?" कालिंद ने रतन से पूछा।

रतन, रोहित के बारे में बखूबी जानता था, लेकिन वह नहीं चाहता था कि इस बात को लेकर बखेड़ा खड़ा हो जाए, इसलिए

प्रज्ञा राहुल

उसने कहा "आपके बारे में अब तक तो जान चुका होगा । शायद आपको देखा नहीं ।" कालिंद को उसकी ये बातें सही नहीं लगीं । उसने रतन से कहा "चलो, फैसला हो जाए कि वह मुझे जानता है या नहीं । उससे प्रणाम करवाने के बाद ही घर लौटूँगा ।"

दोनों रोहित के पीछे-पीछे गये । रोहित एक दुकान के पास रुककर केले खरीद रहा था । रतन और कालिंद दोनों वहाँ आये और रुक गये । रोहित ने उन दोनों को सरसरी नज़र से देखा और अपने काम में मग्न हो गया । कालिंद ने, रतन के कान में धीरे से कहा "देखा, उसने मुझे देखा, पर प्रणाम नहीं किया ।" "शायद वह आपको जानता नहीं होगा । मौक़ा पाकर मैं उसे बता दूँगा" धीरे से रतन ने कहा । वह इस बला को टालना चाहता था ।

"आदमी सामने खड़ा है और तुम कह रहे हो कि मौक़ा पाकर बात करूँगा । यह भी कोई बात हुई? अभी, इसी क्षण मेरा परिचय उससे करावो" कालिंद ने कड़े स्वर में रतन को सावधान किया ।

रतन ने मजबूर होकर रोहित को, कालिंद के बारे में बताया । "मुझे मालूम है कि नये ग्रामाधिकारी आये हैं । अच्छा, ये ही वे नये ग्रामाधिकारी हैं? देखने में अच्छे लग रहे हैं ।" फिर उसने कालिंद से कहा "महाशय, शरीर से बलिष्ठ और सुंदर होना ही सब कुछ नहीं है । आख़िर रूप में रखा ही क्या है । हमारे पुराने ग्रामाधिकारी की तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए वे गाँव छोड़कर चले गये । पूरा गाँव उन्हें बहुत चाहता था, उन्हें बहुत मानता
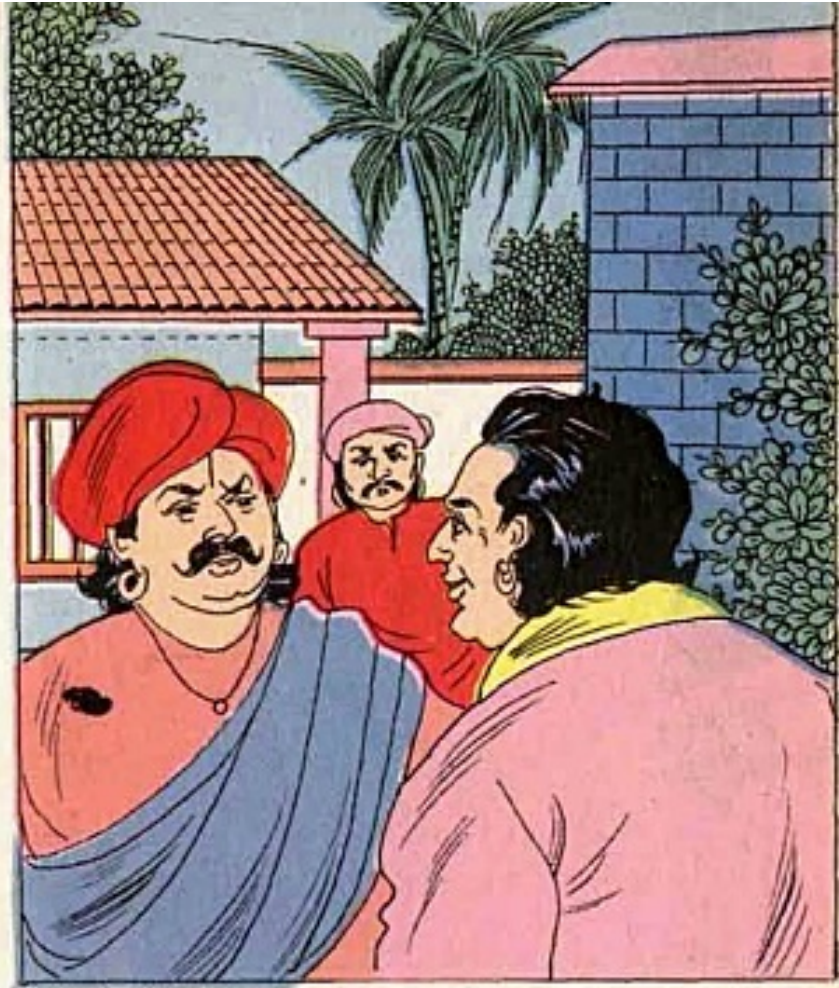
था । आप भी अच्छा नाम कमाएँ, मेरी यही इच्छा है ।"

प्रणाम नहीं किया उल्टे रोहित ने सलाह दी, इसपर कालिंद आग-बबूला हो गया । रतन को सावधान करने के लिए उसने उसकी पीठ खरोंची । रतन समझ गया कि कालिंद क्या चाहता है । उसने रोहित से कहा "साहब, ग्रामाधिकारी आपसे पहली बार मिल रहे हैं । प्रणाम क्यों नहीं कर लेते?"

"अरे, मैं तो भूल ही गया । समझना, मुझसे प्रणाम पाने का भाग्य नहीं हैं उन्हें ।" रोहित ने कहा । "अगर आप भूल गये तो मैं याद दिला रहा हूँ ना । प्रणाम कर लीजिये ।" रतन ने धीमे स्वर में कहा ।

रोहित नाराज़ होता हुआ बोला "किसी को देखते ही मुझमें उनके प्रति आदर की

इतना ज्ञान अवश्य है।'' रोहित ने कहा।

कालिंद का बड़ा अपमान हुआ, फिर भी वह कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था, इसलिए चुप रह गया। घर लौटने के बाद वह रतन पर अपना क्रोध जताने लगा तो उसने कहा ''आप क्यों इस छोटी-सी बात पर इतना परेशान हो रहे हैं। एक मामूली आदमी को लेकर क्यों इतना बखेड़ा खड़ा कर रहे हैं, बात का बतंगड बना रहे हैं। वह रोहित अपने से बड़े और भगवान को छोड़कर किसी को प्रणाम नहीं करता। उसके पीछे पड़ जाएँगे तो आपकी इज़्ज़त मिट्टी में मिल जायेगी। कोई फ़ायदा नहीं होगा।''

''मैं ग्रामाधिकारी हूँ। जो मुझे प्रणाम नहीं करते, उन्हें नुक़सान पहुँचाकर ही दम लूँगा'' कालिंद ने तैश में आकर कहा।

ग्रामाधिकारी ने रोहित के बारे में जानकारी प्राप्त की। पता चला कि वह बहुत ही अच्छा आदमी है, सबकी सहायता करता रहता है, ईमानदार है, सच्चाई पर मर-मिटने के लिए भी सदा तैयार रहता है और कभी कोई ग़लती नहीं करता। कालिंद की समझ में नहीं आया कि रोहित को कैसे डराऊँ, धमकाऊँ। आख़िर उसने एक उपाय सोचा।

उस उपाय के अनुसार सुनंद नामक एक ग़रीब किसान रोहित से मिला और कहा ''महाशय, जब कभी भी मैं कालिंद से मिलता हूँ, प्रणाम करता हूँ। आज ही मैंने उन्हें प्रणाम नहीं किया क्योंकि मैं किसी सोच में खोया हुआ था। बस, वे क्रोध से तिलमिला उठे। पहले तो खेत का कर किश्तों में चुकाने के लिए उन्होंने अनुमति

भावना जागनी चाहिये। तुमने कहा, इसलिए मैं इन्हें प्रणाम करूँ? ऐसा नहीं होगा। समझ लो, मैंने तुम्हारी बात मानकर उन्हें प्रणाम किया तो इसका यह अर्थ हुआ कि मैं उनकी नहीं, तुम्हारी बात को मानकर प्रणाम कर रहा हूँ, आदर उनका नहीं, तुम्हारा कर रहा हूँ।''

रतन ने पूछा ''आप कहना क्या चाहते हैं? क्या आप चाहते हैं कि वे ही आपको प्रणाम करें?'' कालिंद उसकी पीठ को खरोंचे जा रहा था, इसलिए उसे ऐसा पूछना ही पड़ा।

''अच्छी तरह सुन लो। जो माँगकर जबरदस्ती प्रणाम करवाता है, भिखारी भी उसका आदर नहीं करता। शायद इसका ज्ञान तुम्हें न हो, परंतु मेरा विश्वास है कि इनमें

दी। परंतु आज ज़ोर दे रहे हैं कि कर आज ही चुकाया जाए।''

''भला साथ रहते हुए आदमी को हम हर रोज़ क्यों प्रणाम करें? आदत जो पड़ गयी। अब क्या फ़ायदा? तुम्हारे कर की रकम मैं दूंगा। अब कालिंद दिखायी पड़ेगा तो कभी प्रणाम मत करना।'' रोहित ने बताया।

सुनंद ने पूछा ''अधिकारी को प्रणाम करने में क्या ग़लती है?''

''हर दिन जो प्रणाम करता है, वह किसी दिन प्रणाम न करे तो इसे ग़लती कह सकते हैं। हर दिन जो प्रणाम नहीं करता, वह किसी दिन प्रणाम करता है, तो इससे खुशी होती है। ज़रूरत पड़ने पर ही अधिकारी को प्रणाम करना चाहिये। रोज़ प्रणाम करते रहते हो, पर जब उसका कोई प्रयोजन नहीं, तो प्रणाम क्यों करें? प्रयोजन हो, तभी प्रणाम करना सीखो। समझ में आया?'' रोहित ने कहा।

कालिंद को, सुनंद यह बात बताये, इसके पहले ही रोहित ने बहुत-से लोगों को यह बात बता दी। इस वजह से गाँव के बहुत-से लोगों ने कालिंद को प्रणाम करने की आदत छोड़ दी।

कालिंद का उपाय विफल हो गया। उसका पर्यवसान कुछ दूसरा ही निकला। कालिंद को चिंता खाये जा रही थी कि रोहित की वजह से उसकी इज़्ज़त मिट्टी में मिल रही है और वह बदनाम होता जा रहा है।

एक दिन रोहित के पोते को साँप ने डसा। चिल्लाता हुआ वह गिर गया। रोहित का बेटा वैद्य के लिए दौड़ा। कालिंद को यह समाचार मिला तो उसने कहा ''मैं साँप का मंत्र जानता हूँ। रोहित आये और मुझे प्रणाम करे तो उस मंत्र से उसके पोते को

बचाऊँगा।''

किसी ने रोहित से यह बात बतायी, फिर भी वह कालिंद के पास नहीं गया। वैद्य की दवा के असर से उसका पोता जीवित हो गया। किन्तु सब लोग रोहित के हठीले स्वभाव पर नाराज़ हुए।

कुछ दिनों के बाद रोहित के नौकर को साँप ने डसा। उसने तुरंत कहा ''मालिक, मैंने आपके पोते को डसनेवाले साँप को मार डाला था, इसलिए बदला लेने के लिए उसकी साथिन साँपिन ने मुझे डसा है। मंत्र से मैं बच सकता हूँ। नहीं तो मेरी मौत निश्चित है। आपका मैं नौकर हूँ, इसलिए कालिंद मुझे अपनी मंत्र-शक्ति से नहीं बचायेगा। मेरी मौत अटल है।''

''कालिंद को मैं स्वयं जाकर बुलाऊँगा। तुम अधीर मत होना। इतने में चिकित्सा भी करा लेना'' यों उसे समझाकर वह ग्रामाधिकारी के घर गया।

कालिंद उस समय रतन से इधर-उधर की बातें कर रहा था तो रोहित आया और दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए कहा ''आप मेरे नौकर को अपनी मंत्र-शक्ति से बचाइये। आप चाहें तो हर दिन आऊँगा और आपको प्रणाम करता रहूँगा।'' यह सुनकर कालिंद का चेहरा फीका पड़ गया। वह घबराता हुआ बोला ''तुमसे प्रणाम करवाने के लिए ही, मैंने ऐसी अफ़वाह उड़वायी थी। मुझे सचमुच साँप के विष को उतारने का मंत्र नहीं मालूम।''

रोहित हँसता हुआ बोला ''मुझे तो साँप के मंत्र में कोई विश्वास ही नहीं। मैं यह भी जानता हूँ कि मेरे नौकर को डसनेवाला साँप बदला लेने आयी साथिन साँपिन नहीं है। उसपर विष का भी कोई असर नहीं हुआ। किन्तु उसका विश्वास है कि मंत्र से बच सकता हूँ। आप अगर न आयें तो उसका विश्वास उसकी जान लेकर ही छोड़ेगा। आप यह न कहियेगा कि मंत्र-तंत्र नहीं जानता। बस, आप वहाँ आयें, यही बहुत है।''

कालिंद ने रोहित के कहे मुताबिक ही किया। नौकर बिल्कुल चंगा हो गया। परंतु एक आश्चर्यजनक बात हुई। उस दिन से रोहित, कालिंद को प्रणाम करने हाथ उठाता तो वह मना करता। उसने अब स्वयं रोहित को सविनय प्रणाम करने की आदत डाल ली।
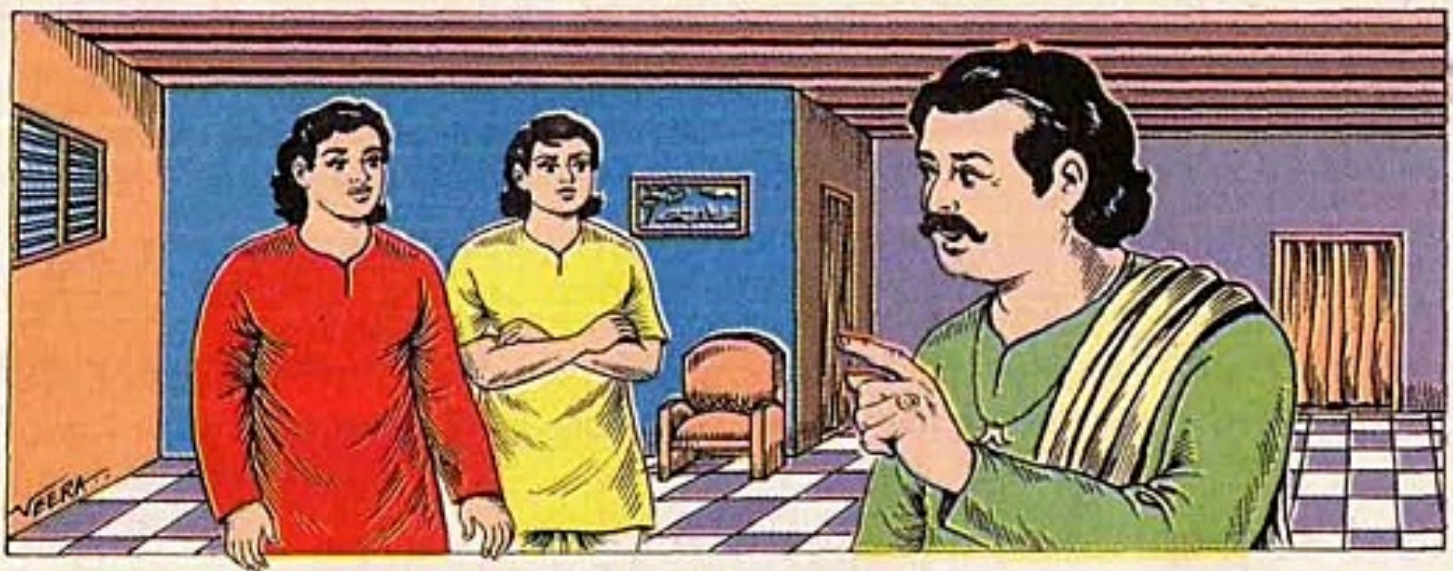
ऋण की वसूली

परमानंद, परमतीर्थ गाँव में सबसे बड़ा धनवान था। सुधीर ने उससे कर्ज़ लिया और चुकाने का नाम ही नहीं ले रहा था। सुधीर को देना है ब्याज सहित हज़ार अशर्फ़ियाँ। परमानंद ने मूलधन ही सही, वसूल करने के अनेकों प्रयत्न किये, किन्तु विफल रहा।

परमतीर्थ गाँव के पड़ोसी शहर में पाटली के ज़मींदार के दीवान में एक मुख्य नौकरी खाली हुई। उसका दिवान परमानंद का जिगरी दोस्त था। इसलिए उसने परमानंद से कहा कि किसी विश्वासपात्र तथा योग्य व्यक्ति को भेजो, जिसे यह नौकरी दी जा सके। विषय जानकर बालाजी और रामचंद्र नामक दो युवक परमानंद से मिलने आये।

परमानंद ने उनसे संबंधित विवरण जानने के बाद कहा ''तुम दोनों में से किसी एक ही की सिफ़ारिश कर सकता हूँ। वह नौकरी जिम्मेदारियों से भरी नौकरी है। प्रधानतया ऋण वसूल करने में दक्षता चाहिये। यह जानना बहुत ज़रूरी है कि किस-किससे किस तरह पेश आना है। चतुर लोग उपाय निकालते रहते हैं कि कर देने से कैसे बचें। ज़मींदार के कुछ ऐसे निकट बंधु होते हैं, जिनके साथ सख्ती से बरतना नहीं चाहिये। इसलिए मैं तुम्हारी परीक्षा लूँगा। जो इस परीक्षा में उत्तीर्ण होंगे, उन्हीं को नौकरी मिलेगी। इस गाँव के सुधीर ने मुझसे ऋण लिया और चुकाने का नाम नहीं ले रहा है। बहुत समय से वह टालता आ रहा है। जो इसे वसूल करेंगे, उन्हें दीवान में अवश्य नौकरी मिलेगी।''

दोनों ने परमानंद की शर्त मानी। उसने उन्हें तीन दिनों की अवधि दी।

तीन दिनों के बाद दोनों वापस आये। उन्होंने परमानंद को सविनय प्रणाम किया।

सुगंधानंद

उसने दोनों से सुधीर से ऋण की वसूली के बारे में पूछा। बालाजी ने मान लिया कि मैं इस प्रयत्न में विफल हुआ।

"कहो, तुम्हें क्या कहना है? तुम सफल हुए या विफल?" परमानंद ने रामचंद्र से पूछा।

रामचंद्र ने कहा "आज से सुधीर ऋण-मुक्त है। मैंने उससे पूरा कर्ज़ ब्याज सहित वसूल कर लिया।" कहते हुए उसने धन की थैली उसके हाथ में थमा दी।

परमानंद ने बड़े ही आनंद से उसकी पीठ थपथपायी और कहा "शाबाश, कल ही दीवान में भर्ती हो जाओ। तुम्हें यह नौकरी ज़रूर मिलेगी।"

दोनों परमानंद की अनुमति लेकर अपना गाँव निकल पड़े। रास्ते में बालाजी ने रामचंद्र से पूछा "मैंने सुधीर से ऋण वसूल करने की बहुत कोशिशें कीं। किन्तु मैं सफल हो नहीं पाया। पर उससे वसूल करने में तुम कैसे सफल हुए ?" उसने उत्सुकता-भरे स्वर में पूछा।

रामचंद्र ने मुस्कुराते हुए कहा "मुझे इस नौकरी की सख्त ज़रूरत है। सुधीर उन आदमियों में से है, जो ऋण तो लेता है, पर वापस नहीं देता। मैंने उसके तौर-तरीक़ों से यह रहस्य जान लिया। मैंने ही उसे दो हज़ार अशर्फ़ियाँ कर्ज़ में देने का वादा किया। कहा कि इस रक़म से हज़ार अशर्फ़ियाँ परमानंद को दूँगा। चूँकि एक हज़ार अशर्फ़ियाँ कर्ज़ में उसे मिलेंगी, इसलिए उसने मेरे प्रस्ताव को सहर्ष मान लिया। मैंने उससे लिखवा लिया कि उसे, मुझसे दो हज़ार अशर्फ़ियाँ कर्ज़ में मिलीं। तब मैंने उसे हज़ार अशर्फ़ियाँ दीं और शेष हज़ार अशर्फ़ियाँ परमानंद को दीं।"

"ये दो हज़ार अशर्फ़ियाँ तुम कैसे सुधीर से वसूल करोगे?" बालाजी ने पूछा।

"इसका एक मार्ग है। पाटली के ज़मींदार से सुधीर के बहुत-से काम होने हैं। दीवान में मुझे नौकरी मिलेगी तो ऐसी हालत में सुधीर से यह रक़म वसूल करना मेरे लिए कोई असाध्य कार्य नहीं" रामचंद्र ने कहा।

बालाजी ने, रामचंद्र की होशियारी की प्रशंसा करते हुए कहा "सच कहा जाए तो तुम्हीं इस नौकरी के लायक़ हो।"
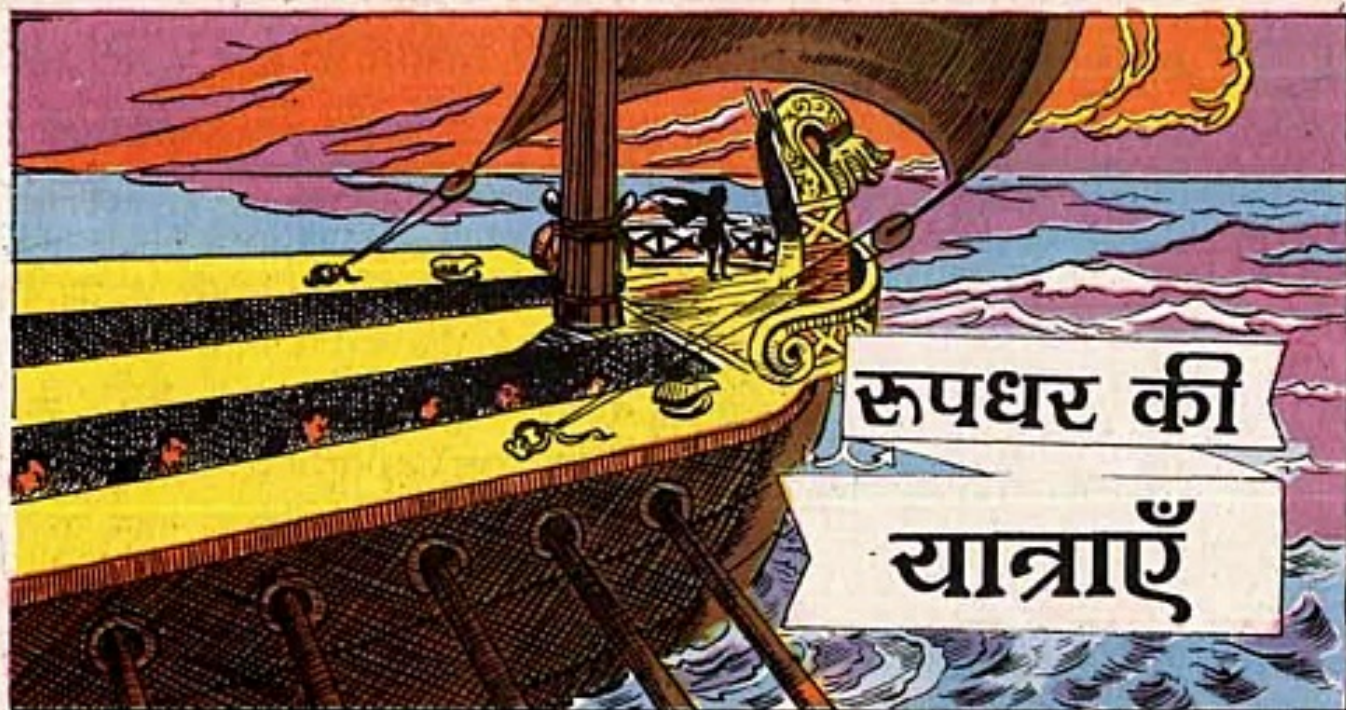
१६

(बीस सालों के बाद स्वदेश लौटे रूपधर को एक बूढ़े भिखारी का रूप धारण करना पड़ा। यह रहस्य केवल उसके पुत्र धीरमति मात्र को मालूम था। रूपधर की पत्नी पद्ममुखी से विवाह करने के लिए कितने ही दुष्ट राजकुमार उसके घर मौके की ताक में बैठे हुए थे। उसकी संपत्ति निगले जा रहे थे। खा-पीकर मौज़-मस्ती कर रहे थे। उन्होंने बूढ़े भिखारी रूपधर का अपमान किया किन्तु उसने अपना क्रोध प्रकट होने नहीं दिया। वह चुपचाप सब कुछ सहता रहा और प्रतीकार के समय की प्रतीक्षा करने लगा। उस रात को सब के चले जाने के बाद उस कमरे में केवल रूपधर और धीरमति रह गये)

रूपधर ने धीरमति की ओर मुड़ते हुए कहा "पुत्र, दीवारों पर जो-जो हथियार हैं, उन्हें एक कमरे में छिपा दो। किसी ने उनके बारे में तहक़ीकात की तो कहना कि सुरक्षित हैं और छिपा रखा है।"

धीरमति ने अपनी माता की दासियों में से बड़ी बहुकीर्ति को बुलाकर कहा "नानी, सब दासियों से कहना कि वे अपने-अपने कमरों में चली जाएँ और दरवाज़े बंद कर लें। मेरे पिताजी के चले जाने के बाद इन हथियारों की ओर किसी ने देखा तक नहीं। देखो, कितनी फफूँदी चढ़ गयी। अब तो मैं बड़ा हो गया, इसलिए इनकी सुरक्षा का भार मुझ पर ही है।" उत्साह-भरे स्वर में उसने कहा।

"बेटे, घर का सारा भार तुम्हीं पर है। इसके मालिक तुम ही हो।" बहुकीर्ति ने कहा। यह बूढ़ी रूपधर के बचपन में उसकी दाई थी।

उसके चले जाते ही रूपधर और धीरमति ने दीवारों पर टंगे ढाल, शिरस्त्राण, बर्छियाँ

आदि कमरे में रख दिये, जहाँ और सामान भी पड़ा हुआ था। यह काम पूरा होते ही रूपधर को वहीं छोड़ दिया और धीरमति अपने शयनागार में चला गया।

थोड़ी देर में पद्ममुखी नीचे उतर आयी और विशाल कक्ष में एक आसन पर बैठ गयी। दासियों ने नयी लकड़ियाँ डालकर चूल्हे जलाये। एक दासी ने रूपधर को देखा तो कहा "तुम अब भी यहीं हो। क्या अब भी पेट नहीं भरा?" अपमानजनक ढंग से उसने बात की।

"बेवकूफ़ कहीं की। क्यों यों अंटसट बक रही हो। तुम जानती हो कि मैं इनसे बात करनेवाली हूँ, फिर भी तुमने ऐसा बरताव क्यों किया? ऐसी बातें मुँह से क्यों निकालीं?" दासी को पद्ममुखी ने खूब डाँटा और रूपधर के बैठने के लिए अपने सामने एक आसन लगवाया। रूपधर के बैठने के बाद उसने कहा "महाशय, आप कौन हैं? किस देश के हैं। आपके क्या कुलगोत्र हैं?"

रूपधर ने अपने बारे में कोई दंतकथा बतायी और कहा "मैं सिसिली देश का हूँ। युद्ध करने निकलने के पहले रूपधर मेरा अतिथि बनकर मेरे घर में रहा।" उसे, उसकी बातों का विश्वास हो, इसके लिए उसने उस समय रूपधर के पहने वस्त्रों, आयुधों तथा उसके सेवकों के नाम बताये। पद्ममुखी ने रूपधर को वे वस्त्र युद्ध के लिए निकलते समय स्वयं दिये थे। उस दृश्य का वर्णन सुनते ही पद्ममुखी ने भिखारी रूपधर की बातों का पूरा-पूरा विश्वास किया।

उसने बहुकीर्ति को बुलाया और कहा "ये अतिथि तुम्हारे यजमान के मित्र हैं। इनके पाँव धोओ।" बहुकीर्ति ने एक बड़े बरतन में ठंडा और गरम पानी डाला और अतिथि के पाँव धोने लग गयी। रूपधर ने अपनी धोती थोड़ी ऊपर कर दी। उसके पाँव पर जो दाग़ था, बहुकीर्ति ने देख लिया उसने रूपधर को पहचान लिया। उसके हाथ का बरतन धड़ाम् से नीचे गिर गया और पूरा पानी ज़मीन पर गिर गया। चिल्लाने के लिए उसने मुँह खोला तो रूपधर ने तुरंत उसका मुँह बंद किया और कहा "नानी, मेरा रहस्य बताकर मेरा नाश न करना। बीस सालों तक नाना प्रकार के कष्ट झेले और घर पहुँच पाया। अब थोड़े-से कष्ट शेष रह गये हैं। उन कष्टों को भी जब तक दूर न करूँ, तब तक रहस्य को रहस्य ही बने रहने दो।"

बहुकीर्ति ने इशारा करके अपनी मंजूरी दी और फिर से पानी लाने अंदर गयी।

उसने जिस दाग़ को देखकर रूपधर को पहचाना, वह उसके बचपन में यों हुआ। जब वह किशोर था, तब उसके मामाओं ने भेंटें देने उसे अपने यहाँ बुलवाया था। एक दिन रूपधर अपने नाना तथा मामाओं के साथ शिकार करने गया। सबसे पहले उसने एक जंगली सुवर को देखा और उसका शिकार करके उसे मार ड़ाला। किन्तु उसकी बर्छी के वार से मरने के पहले उस सुवर ने अपनी सींग से उसे घायल किया। वह घाव सूख गया और दाग़ बन गया।

पद्ममुखी को मालूम नहीं था कि बहुकीर्ति ने अपने यजमान को पहचान लिया। रूपधर पाँव पोंछकर जब वापस आया तब पद्ममुखी ने उससे कहा "महाशय, मैं एक जटिल समस्या का सामना कर रही हूँ। अब तक तो मेरा बेटा छोटा था, मेरा आँचल छोड़ता नहीं था, इसलिए किसी और से शादी करके घर छोड़कर चले जाने की नौबत नहीं आयी। अब वह बड़ा हो गया। मुझसे भी अधिक देखभाल उसे करनी है अपनी ज़ायदाद की। उसकी रक्षा, मेरी रक्षा से भी अधिक महत्व रखती है।

घर में बैठे ये राजकुमार स्वयंवर के लिए ज़ोर दे रहे हैं। मुझपर दबाव ड़ाल रहे हैं। यहाँ बैठे-बैठे इसकी सारी जायदाद खाये जा रहे हैं। मेरा बेटा इनके कारण बहुत ही दुखी है। अगर यही ज़ारी रहा तो जायदाद पूरी की पूरी ख़तम हो जायेगी। इसलिए लगता है कि मुझे शादी करनी हो पड़ेगी। इसके

लिए मैंने एक उपाय सोच रखा। मेरे पति बारह कुल्हाडियों के सिर एक क़तार में रखते थे और बाण छोड़ते थे, वे बाण उनमें से होते हुए सीधे लक्ष्य को गिराते थे। मैंने अपने आप निश्चय कर लिया कि जो ऐसा कर सकेगा, उसी से मैं शादी करूँगी।"

बाद वह अपने कमरे में चली गयी और सो गयी। रूपधर, कमरे के सामने बकरियों की छाल बिछाकर लेट गया। पर नींद नहीं आ रही थी। रात भर वह प्रतीकार की पद्धतियों पर सोचता रहा और सबेरा होते ही उठ बैठा। भगवान की प्रार्थना की।

सबेरे ही सब अपने-अपने काम पर निकल पड़े। सुवरों का रखवाला तीन बलिष्ठ सुवर ले आया। उसने रूपधर को देखकर कहा "यहाँ की भीड़ तुम्हारी ठीक तरह से देखभाल

कर रही है या नहीं। क्या अब भी वे तुम्हें सता रहे हैं? उनकी टेढ़ी बुद्धि थोड़े ही ठिकाने आयेगी।''

''वे नीच हैं। उनका बरताव पाशविक है। ऐसे लोगों को भगवान अवश्य ही दंड देगा।'' रूपधर ने कहा।

उनकी बातचीत के दौरान चरवाहा काली वहाँ आया। अपने नये यजमानों के खाने के लिए वह बड़ी-बड़ी और छोटी-छोटी बकरियाँ ले आया। बाहर उन्हें बाँधते हुए रूपधर को देखकर उसने कहा ''अरे ओ भिखमंगे, अब भी तुम यहीं हो। भीख माँगने के लिए इतने बड़े नगर में कोई और घर नहीं मिला?''

रूपधर ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके मन में क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो रही थी।

इतने में सुखप्राप्ति नामक एक पशुपालक एक गाय और कुछ बकरियों को वहाँ ले आया। उसने रूपधर को देखकर सुवरों के रखवाले से पूछा कि यह कौन है और किस देश का है, क्योंकि उस बूढ़े भिखारी को देखते ही उसे अपने यजमान की याद आयी। उसकी आँखों में आँसू भर आये। उसने रूपधर से कहा ''हमारे यजमान भी तुम्हारी ही तरह गंदे व फटे-पुराने कपड़े पहनकर दिशाहीन और अनाथ की तरह कहीं घूमते-फिरते होंगे। इसी उम्मीद पर मैं अब भी यहीं काम कर रहा हूँ कि किसी दिन वे अवश्य लौटेंगे। नहीं तो इन पेटुओं के यहाँ थोड़े ही टिकता।'' उसने रूपधर से बड़ी दर्द-भरी आवाज़ में ये बातें कहीं।

रूपधर ने उससे कहा ''लगता है, तुम बहुत ही नेक आदमी हो। डरो मत। यहाँ तुम्हारे रहते हुए ही तुम्हारे यजमान लौट आयेंगे और इन दुष्टों का सर्वनाश करेंगे।''

सुखप्राप्ति ने कहा ''तुम्हारी बात सच निकले और इस सर्वनाश में मैं भी भाग

लूँगा। हाथ धरे चुप नहीं बैठूँगा।''

ठीक इसी समय पर सब दुष्ट एक साथ इकट्ठे हुए और धीरमति की हत्या की योजना बनाने लगे। एक ने कहा ''भाइयो, अपशकुन दीख रहे हैं। यह योजना असफल साबित होगी। धीरमति की हत्या का प्रयत्न अभी स्थगित कर दो। पहले चलें यहाँ से और भोजन करें।'' सब उठे और सामनेवाले कमरे में आये। कुछ पशुओं को जलाकर आग पर सेंकने लगे। रोटियाँ और पेय आ गये। सबों ने खाना शुरू किया।

दरवाज़े के बग़ल में ही धीरमति ने, रूपधर के लिए एक कुर्सी और एक मेज़ का प्रबंध किया। उसने अपने पिता के सामने आहार और पानी रखवाया और कहा ''आराम से खाना खाओ। तुम्हें अपमानित होने से बचाऊँगा। यह कोई खाली मैदान नहीं है, मेरे पिता का घर है। अब यह मेरी संपत्ति है। मैं आप सबसे प्रार्थना करता हूँ कि आप सब लोग ठीक तरह से बरताव करें। नहीं तो मैं चुप बैठनेवाला नहीं हूँ।'' उसने हर लफ़्ज़ पर ज़ोर देते हुए कहा।

उसकी बातों ने सबों को आश्चर्य में डाल दिया। दुर्बुद्धि ने अपने मित्रों की ओर देखकर कहा ''सुनी उसकी धमकी। आज अच्छा दिन है पर अपशकुन आसार आ रहे हैं, नहीं तो उसका मुँह बंद करते।''

धीरमति ने उसकी बातें सुनीं परंतु, उनकी परवाह नहीं की। उन दुष्टों में अश्वनिनिपुण नामक एक घमंडी था। वह अमीर था। उसकी आशा थी कि उसकी संपत्ति पर पद्ममुखी लट्टू हो जायेगी और उससे शादी करने उतावली होगी। इसी आशा को लेकर वह दूर प्राँत से आया था। उसने अपने अनुचरों से कहा ''देखो, यह बूढ़ा भिखारी हमारे साथ बैठकर खाना खा रहा है, पी रहा है। इसे
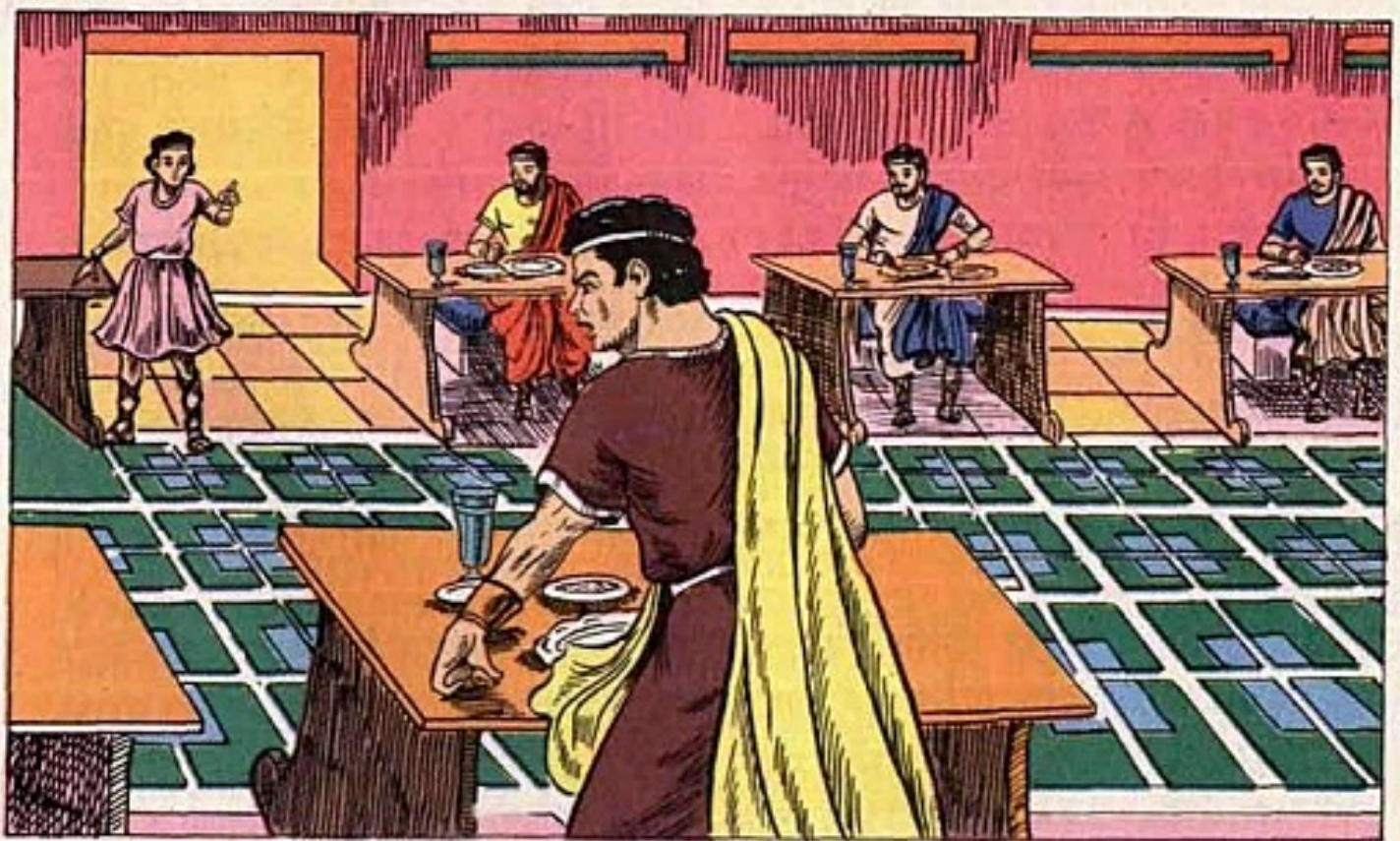
थोड़ा और ऊँचा बिठाकर तमाशा देखेंगे। देखते रहो, मैं इसे क्या पुरस्कार देने जा रहा हूँ?'' कहते हुए उसने गाय के खुर की जोड़ी ली और रूपधर के सिर पर ज़ोर से फेंकी।

रूपधर ने अपना सिर दूसरी तरफ़ मोड़ लिया और उस चोट से अपने को बचा लिया।

धीरमति ने क्रोध और व्यंग्य-भरे स्वर में कहा ''अश्वनिनिपुण, तुम्हारा निशाना चूक गया। अतिथि ने अपने को बचा लिया। नहीं तो बड़ी चोट लगती। अगर उसे चोट लगती तो मेरा यह भाला तुम्हारी छाती में चुभ जाता। मैं फिर से कह रहा हूँ। सुनो, अपने को काबू में रखो। अपनी सीमाएँ पार न करो। मैं अब कोई बच्चा नहीं हूँ। तुम लोग विशृंखल होकर मेरे पशुओं को काटकर खा रहे हो, शराब पी-पीकर मस्ती में झूम रहे हो। आगे से मैं यह सब सहनेवाला नहीं हूँ।''

कोई कुछ नहीं बोला। आख़िर एक ने कहा ''मित्रो, उस भिखारी से छेड़छाड़ मत करो। धीरमति, हम तो सिर्फ़ तुम्हारी माँ का स्वयंवर चाहते हैं। हमारी समझ में नहीं आता कि वह किसकी प्रतीक्षा में है। हममें से किसी को क्यों नहीं चुनती?''

दरवाज़े के सामने आसन पर बैठी पद्ममुखी ये सब बातें ध्यान से सुन रही थी। वह वहाँ से उठी और उस कमरे में गयी, जहाँ उसके पति का सामान रखा हुआ था। उसने कमरे का ताला खोला। उस कमरे में रूपधर का धनुष और तरकस थे। किसी ने रूपधर को यह धनुष भेंट में दी थी। युद्ध में रूपधर इसे अपने साथ ले नहीं गया था। पद्ममुखी उस धनुष को अपनी गोद में रखकर थोड़ी देर तक रोती रही। फिर उसने अपने आँसू पोंछ लिये। धनुष व तरकस को लेकर नीचे उतर आयी। नौकर कुल्हाडियों के सिरों को एक बड़ी-सी थाली में क़रीने से रखकर उसके पीछे-पीछे आया।

पद्ममुखी ने विशाल कक्ष के द्वार पर खड़ी होकर अपने मुख को घूँघट में छिपाते हुए कहा ''सब ध्यान से सुनिये। आप सब मुझसे विवाह करने आये; मेरे घर को घेर लिया; हमारे घर की संपत्ति लूट रहे हैं; पीते जा रहे हैं और शोरगुल मचा रहे हैं। आपमें से कोई भी बता नहीं पाया कि मुझसे शादी करने की योग्यता आपमें क्या है। हाँ, योग्यता सिर्फ यही है कि आप मुझसे शादी करना चाहते हैं। अपनी योग्यता का प्रदर्शन कीजिये और मुझे पुरस्कार के रूप

में पाइये। यह देखिये, मेरे पति का धनुष। आपमें से जो मेरे पति के धनुष की प्रत्यंचा चढ़ायेंगे और इन बारहों कुल्हाड़ियों के सिरों से होते हुए बाणों का संधान करेंगे, लक्ष्य को जो बेधेंगे, उससे मैं शादी करूँगी।''

ऐसा कहकर उसने सुवरों के रखवाले को बुलाया और उसे धनुष, बाण व कुल्हाडियों के सिर सौंपते हुए कहा कि इन्हें सबको दिखाना। उन्हें हाथ में लेते हुए रखवाले की आँखों में आँसू छलके। दूर खड़े सुखप्राप्ति की आँखों में भी आँसू भर आये। उन दोनों को रोते हुए देखकर दुर्बुद्धि ने कहा ''औरतों की तरह यों क्यों विलाप कर रहे हो? खाना खाना हो तो बैठकर खाओ। अगर रोने का इरादा है तो बाहर जाकर आराम से रोना। अब हमारे हाथ एक ठोस काम आ पड़ा है। क्योंकि मैं नहीं समझता कि इस धनुष को झुकाना इतना सुगम काम है। रूपधर जैसा बलशाली यहाँ नहीं है। मैं अपने बचपन में खुद उन्हें देख चुका हूँ। वे कितने बलवान हैं, मैं भली-भांति जानता हूँ।''

उसने कह दिया वैसे ही, लेकिन उसका विश्वास था कि धनुष को झुका सकूँगा, प्रत्यंचा चढ़ा सकूँगा और बाणों को कुल्हाडियों के सिरों से होते हुए निशाना लगा सकूँगा।

धीरमति आवेशपूरित होकर चिल्ला पड़ा ''आहा, मेरी माँ के विवाह का समय आसन्न हो गया। यह दृश्य देखते हुए मैं पागल होता जा रहा हूँ। मेरी माँ जैसी उत्तम स्त्री इस विश्व में कहीं व कोई नहीं है। किन्तु मेरे कहने से क्या फ़ायदा? दो यह धनुष! देखूँ कि मैं इस प्रत्यंचा को चढ़ा पाऊँगा या नहीं।'' कहते हुए उसने कुल्हाडियों के सिरों को बड़ी ही तत्परता व चतुरता के साथ एक क्रम में रखा और धनुष अपने हाथ में लिया। प्रत्यंचा को चढ़ाने के लिए उसने तीन बार प्रयत्न किये। अगर वह अपने प्रयत्न में और तत्परता दिखाता तो शायद वह सफल हो जाता किन्तु रूपधर ने आँखों से इशारा करके उसे ऐसा करने से मना किया। तब धीरमति ने कहा ''अरे, मैं तो इस विषय में बिल्कुल कच्चा हूँ। किसी काम का नहीं। इस उम्र में यह काम मेरी शक्ति के बाहर है। यहाँ तो दिग्गज बैठे हुए हैं। अपने बल-पराक्रम का प्रदर्शन कीजिये। देखते हैं, कौन है वह पराक्रमी।''

- सशेष

H-F3

'चन्दामामा' की ख़बरें

उत्तर ध्रुव में भारत का झंडा

भारतीय वैमानिक दल के क्वाडन नेता संजय थापर, अप्रैल २१ को उत्तर ध्रुव पहुँचे। इससे भी बढ़कर विशेषता यह है कि वे १०,००० फुट की ऊँचाई से कूदे याने 'स्कै डैविंग, करके वहाँ पहुँचे। हेलिकाप्टर से नीचे कूदते ही उतरने के लिए सही जगह की खोज में दो बार पल्टी खायी। इसके बाद क्षण भर में १७६ फुट की तेज़ी से नीचे उतरते गये। आख़िरी ३०० फुट की ऊँचाई पाराचूट की सहायता से उतर आये। हेलिकाफ़्टर से भूमि पर पैर जमाने के लिए कुल मिलाकर उन्हें छे मिनिट लगे। आर्कटिक ध्रुव में पहला काम उन्होंने जो किया, वह था भारतीय झंडे को फहराना। जब वे हेलिकाफ़्टर से भूमि पर कूदे तब भूमि की उष्णोग्रता २६ डिग्रीस संल्सियस थी। किन्तु वहाँ की उष्णोग्रता ६२ सेल्सियस डिग्रीस थी। एक और विशेषता यह कि भारत में अधिक 'स्कै डैविंग' करनेवाले व्यक्ति संजय थापर ही हैं। रूस द्वारा संचालित 'पारा रेस्क्यू सेंटर' की साहस-भरी यात्रा में इन्होंने भाग लिया।

अक्षरज्ञान की वृद्धि के लिए

रामप्रकाश बाल्डे मध्यप्रदेश के मांडोर जिले के हैं। उनकी उम्र है बाईस साल। उन्होंने दसवीं कक्षा तक ही शिक्षा प्राप्त की। जन्म से ही उनका दायाँ पाँव नहीं था, इसलिए वे आगे पढ़ नहीं पाये। पर अपने एक ही पैर के सहारे मोटर साइकिल पर देश भर की यात्रा की। उनका उद्देश्य था कि इस यात्रा के द्वारा अक्षरज्ञान की आवश्यकता पर प्रकाश डालूँ। रामप्रकाश, जुलाई में मध्यप्रदेश से निकले। ३२ राज्यों व केंद्र-शासित राज्यों में उन्होंने पर्यटन किया। अगस्त, १५ को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वे दिल्ली पहुँचे। द्विचक्र वाहन पर अत्यंत अधिक दूरी तक एक विकलांग होते हुए भी उन्होंने यात्रा की, इसलिए वे चाहते हैं कि उनका नाम 'गिन्नीस बुक आफ रिकार्डर्स' में दर्ज हो। रोटरी क्लब, लयन्स क्लब आदि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने उन्हें भरसक प्रोत्साहन दिया।

एमिली की कहानी

अमेरीका के मांस विक्रयशाला के मालिक ने एमिली नामक पाँच साल की एक गाय खरीदी और अपने यहाँ बाँध दी। चारों ओर पाँच फुट का बाड़ा था, इसलिए उसने सोचा कि एमिली भागकर कहीं नहीं जा सकेगी। किन्तु एक दिन एमिली दिखायी नहीं पड़ी।

उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि इतना बड़ा शरीर लेकर पाँच फुट की ऊँचाईवाले बाड़े को लाँघकर वह कैसे जा पायी। वह उस गाय की तलाश करने लगा। तत्संबंधी विज्ञापन भी अख़बारों में छपवाया। मासा चूसेट्स, बोस्टन के समीप के जंगलों में एमिली पकड़ी गयी। बोस्टन के समीप के ही हास्कंटत के नागरिक मेरांडा व लूयिस रांडा दंपतियों ने उस गाय को पकड़ने में मदद पहुँचायी। वे दंपति शाकाहारी हैं। घोड़ों, बकरियों, कुत्तों, खरगोशों आदि जंतुओं की रक्षा करनेवाली 'फेस अबे फार्म' नामक संस्था के संचालक हैं। मांस विक्रयशाला का मालिक उनके जन्तु-प्रेम पर बड़ा ही खुश हुआ। यद्यपि बहुत-से लोग ५०० डालर देकर एमिली को खरीदने तैयार हुए, किन्तु उसने उसे बेचने से इनकार कर दिया और सिर्फ एक डालर लेकर रांडा दंपति को वह गाय सौंपी। रांडा दंपतियों ने तब कहा कि एमिली की वास्तविक कहानी के द्वारा हम शाकाहार की आवश्यकता का प्रचार करेंगे। बच्चों को सिखायेंगे कि जंतुओं को कैसे पालना है। एमिली की कहानी पर आधारित एक चल-चित्र भी बननेवाला है।

पानी का मतलब है आग

इसे दुनिया की अजीब बात कह सकते हैं। जर्मनी की आठ साल की बच्ची हैड फाल्कनर पानी पीना चाहे या पानी से नहाना चाहे, तो बेचारी डर रही है, छटपटा रही है।
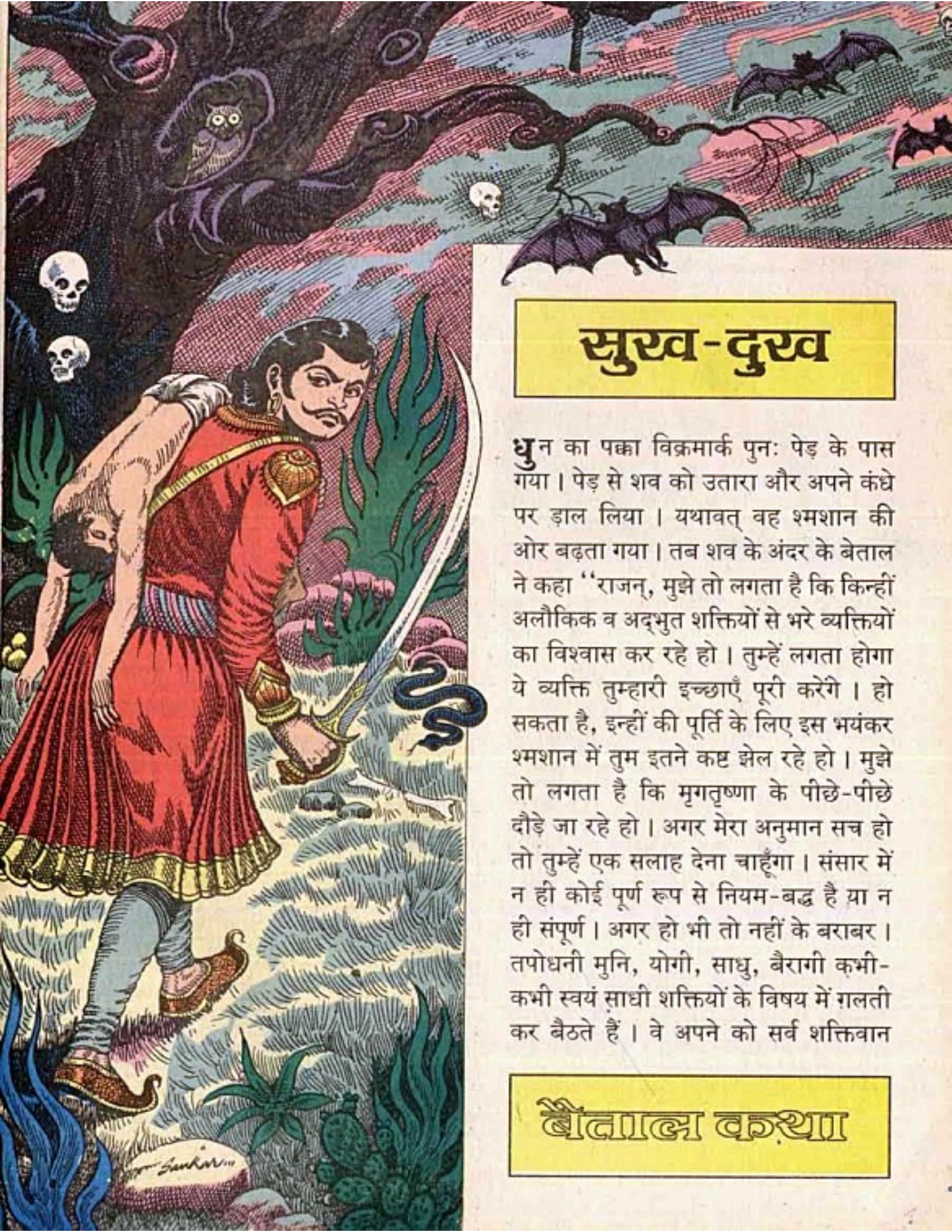
सुख-दुख

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया । पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर ड़ाल लिया । यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ता गया । तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, मुझे तो लगता है कि किन्हीं अलौकिक व अद्भुत शक्तियों से भरे व्यक्तियों का विश्वास कर रहे हो । तुम्हें लगता होगा ये व्यक्ति तुम्हारी इच्छाएँ पूरी करेंगे । हो सकता है, इन्हीं की पूर्ति के लिए इस भयंकर श्मशान में तुम इतने कष्ट झेल रहे हो । मुझे तो लगता है कि मृगतृष्णा के पीछे-पीछे दौड़े जा रहे हो । अगर मेरा अनुमान सच हो तो तुम्हें एक सलाह देना चाहूँगा । संसार में न ही कोई पूर्ण रूप से नियम-बद्ध है या न ही संपूर्ण । अगर हो भी तो नहीं के बराबर । तपोधनी मुनि, योगी, साधु, बैरागी कभी-कभी स्वयं साधी शक्तियों के विषय में ग़लती कर बैठते हैं । वे अपने को सर्व शक्तिवान

बैताल कथा

मानकर सीमाएँ लाँघते हैं, जिससे उनका अपमान होता है। अपनी शक्तियों पर उनका प्रबल विश्वास होता है। समय आने पर ही यह प्रमाणित होता है कि यह विश्वास निराधार व अंधा है। इसलिए विवेकी को चाहिये कि ऐसे लोगों का विश्वास करने में सावधानी बरते। उदाहरणार्थ मैं तुम्हें अद्‌भुत शक्तियों से भरे एक बैरागी की कहानी सुनाऊँगा, जिसका अपमान एक साधारण पंडित के हाथों हुआ।'' बेताल आगे यों कहने लगा।

कौशिक घर के बाहर के चबूतरे पर बैठकर पुराण पढ़ रहा था। तब वहाँ एक बैरागी भिक्षा माँगने आया। कौशिक ने सिर उठाकर बैरागी को देखा और नित्संकोच पूछा ''तुम्हें भिक्षा दूँ तो मेरा क्या लाभ होगा?''

''मैं संपूर्ण बैरागी हूँ। मुझे जैसे परित्यागी को भिक्षा दोगे तो पुण्य मिलेगा। प्राण-पखेरु के उड़ जाने पर वह तुम्हें उत्तम लोक ले जायेगा।'' बैरागी ने कहा।

''जो मैं चाहता हूँ, अगर दोगे तो भिक्षा ही क्यों, पेट भर खाना भी खिलाऊँगा।'' कौशिक ने शर्त रखी। बैरागी ने उससे कहा कि तुम क्या चाहते हो, बताओ। ''सामनेवाले घर में सत्कार नामक एक पंडित रहता है। उसे दुख पहुँचे, ऐसा वर दो। मैं सदा खुश रहूँ, ऐसा दूसरा वर दो। मुझे केवल ये दो ही वर चाहिये, और कुछ नहीं।'' कौशिक ने कहा।

''मैं तुम्हें एक ही वर दे सकता हूँ। सदा तुम खुश रहो, यही एक वर मैं तुम्हें दूँगा।'' बैरागी ने स्पष्ट किया। कौशिक ने कड़े स्वर में कहा ''जाओ, जाओ। तुम से आगे बातें करना भी बेकार है।''

बैरागी वहाँ से चला गया। इतने में कौशिक की पत्नी अंदर से आयी और बोली ''आपने यह क्या कर दिया। बैरागी वर देने को तैयार है और आप इनकार कर रहे हैं। यह भी कोई बात हुई ? हो सकता है, सत्कार दोनों वरों को पा ले और धन्य हो जाए।'' घबराती हुई वह बोलती रही।

कौशिक हँस पड़ा और कहा ''पगली, वर देने की महिमा होती तो क्यों वह दर-दर भटकता फिरता।''

''तब आपने इतनी देर तक उससे बातें क्यों कीं? वर क्यों माँगे? अगर बैरागी आपके दोनों वरों को देने तैयार होता तो आप क्या करते?'' कौशिक की पत्नी ने प्रश्न-किया।

''कुछ बैरागियों में क्षुद्र शक्तियाँ होती हैं। ऐसे बैरागी मुझे खुश कर पायें या नहीं, पर दूसरों को अवश्य ही दुख पहुँचा सकते हैं। मेरी आशा थी कि शायद यह ऐसे बैरागियों में से होगा। पर जान गया कि ऐसी भी शक्ति इसमें नहीं है'' कौशिक ने कहा।

धीरे-धीरे जाते हुए बैरागी को ये बातें सुनायी दे रही थीं। वह सामने के घर के आगे रुक गया और कहा ''भिक्षां देही।''

तुरंत उस घर के दरवाज़े खुले। अंदर से सत्कार आया और बैरागी से कहा ''आज का दिन मेरे लिए बड़ा ही शुभ दिन है। यह मेरा भाग्य है कि आप ही स्वयं चले आये। स्वर्गीय मेरे दादाजी का आज जन्म-दिन है। जब तक वे जीवित रहे तब तक वे अतिथि-सत्कार करते रहे। हम उस परंपरा को बनाये रखने के लिए आज के दिन किसी सत्पुरुष का सत्कार करते रहते हैं। मैं इसी काम पर निकल ही रहा था कि आप प्रत्यक्ष हुए। अंदर पधारिये'' कहकर बड़े ही आदर के साथ बैरागी को अंदर ले गया।

बड़े आदर के साथ बैरागी का स्वागत हुआ। भोजन समाप्त होने के बाद बैरागी ने सत्कार से कहा ''अतिथि-सत्कार में तुम्हारी बराबरी करनेवाला कोई और नहीं है। मैं तुमसे बहुत ही प्रसन्न हूँ। कहो, तुम्हें क्या चाहिये?''

सत्कार ने विनयपूर्वक नमस्कार करते हुए कहा ''महाशय, अपनी आत्म-तृप्ति के लिए मैंने आपको आतिथ्य दिया। आपसे अगर इसके प्रतिफल की आशा करूँ तो मूल्य लेकर

खिलाये जानेवाले किसी साधारण भोजनालय में और मेरे घर में क्या अंतर रह जायेगा। मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिये। आप जैसे अतिथि के सत्कार का भाग्य मिला, यही मेरे लिए सब कुछ है।''

बैरागी आनंदित होता हुआ बोला ''मैं तुम्हारा अतिथि हूँ। अतिथि भगवान के समान है। भगवान वर देना चाहता है और तुम अस्वीकार कर रहे हो? यह उचित नहीं। यह तो अतिथि का अपमान हुआ। तुम्हें वर माँगना ही पड़ेगा।''

तब सत्कार ने अपने परिवार के सब सदस्यों को बुलाया। जब सब लोगों ने निर्णय लिया तो सत्कार ने, बैरागी से कहा ''महोदय, एक वर्ष पहले मेरे पिताजी दिवंगत हुए। तब से मेरी माँ दुखी हैं और शय्या पर

पड़ी रहती हैं। दिन ब दिन क्षीण होती जा रही हैं। उनकी स्थिति देखते हुए हमें तीव्र दुख हो रहा है। हम चाहते हैं कि वे स्वस्थ हों और घूम-फिर सकें।''

यह सुनते ही बैरागी गंभीर हो गया। थोड़ी देर बाद उसने कहा ''पुत्र, तुम बहुत ही नेक आदमी हो। तुम्हारी नेकी ही तुम्हारे लिए शाप बन सकती हैं। मुझे तो लगता है कि अगर अपनी इस नेकी से छुटकारा नहीं पाओगे तो तुम्हारी माँ शायद ही स्वस्थ हो। क्या अपनी माँ के लिए तुम कुछ भी करने को सन्नद्ध हो?''

''आपकी बातें मैं समझ नहीं पाया'' सत्कार ने कहा।
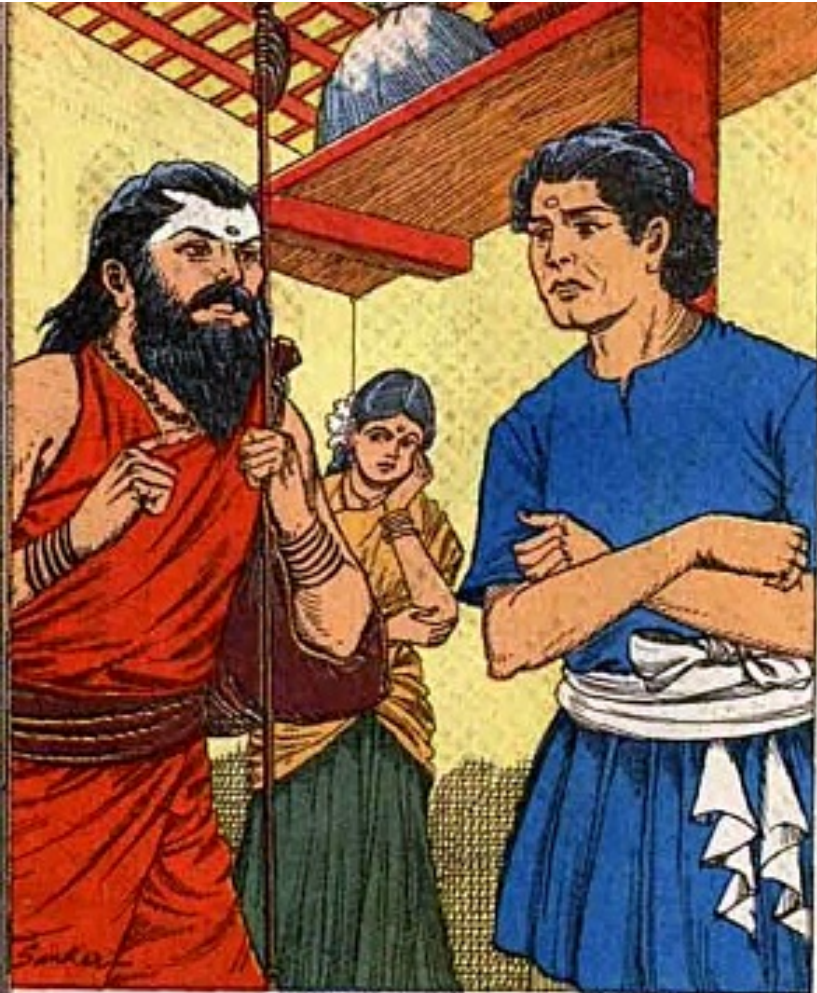
तब बैरागी ने सामनें के घरवाले कौशिक की बातें सुनायीं और कहा ''सच मानो, मेरे पास एक गोली है। उसे जैसे ही मुँह में डालोगे, उससे दूसरे को दुख पहुँचेगा और तुम्हें आनंद देगा। ये दोनों वर एक साथ प्राप्त होंगे। किन्तु इनमें से एक ही वर चाहोगे तो उस वर की प्राप्ति व फल की बात छोड़ो, इससे अनर्थ होने की भी संभावना है। मैं तुम्हें यह गोली दूँगा। इसे खाने से अपनी माता की स्वस्थता से तुम धन्य हो जाओगे पर, सामनेवाले घर के कौशिक के दुखों का आरंभ होगा। वह तुम्हें दुख पहुँचाने के लिए कटिबद्ध है, इसलिए उसे दुखी देखने में कोई आनाकानी मत करो। इसमें कोई पाप नहीं।''

बैरागी की बातें सुनकर सत्कार आश्चर्य में डूब गया। उसने कहा. ''स्वामी, आपके पास जब ऐसी गोली है तो आपने कौशिक का अतिथि-सत्कार स्वीकार क्यों नहीं किया और उसे वह गोली क्यों नहीं दी? गोली से उसकी दोनों इच्छाएँ पूरी हो जातीं। उसका जी आनंद से भर जाता। दूसरे को दुख पहुँचाने से मेरे मन की शांति छिन जायेगी। मेरी माँ अस्वस्थ रहे, इसकी भी मैं परवाह नहीं करता। पर किसी भी स्थिति में मैं दूसरे को दुख पहुँचा नहीं सकता। आपकी गोली मुझे नहीं चाहिये।''

बैरागी ने कहा ''मेरी दृष्टि में तुम ही इसके योग्य हो, अतः तुम्हें ही यह गोली दे रहा हूँ। अगर तुमने इसे लेने से इनकार किया तो जान लो, अतिथि-सत्कार के नियमों का उल्लंघन कर रहे हो। समझना होगा कि अतिथि-सत्कार में तुम्हें विश्वास नहीं है। इस गोली का उपयोग करके अपना कर्तव्य

निभावो।" कहकर बैरागी ने सत्कार को गोली दी और चला गया।

हिचकिचाये बिना सत्कार ने गोली मुँह में डाल ली और कहा "मेरी माँ हमेशा की तरह स्वस्थ हों, मेरा यह घर भव्य भवन के रूप में परिवर्तित हो।"

यह सुनते ही सत्कार के परिवार के सदस्य घबरा गये और कहने लगे "दोनों वरों से हमारा लाभ ही होगा। पता नहीं, ऐसा करने से हमारी क्या हानि होगी। बैरागी जैसा चाहते थे, आपने ऐसा नहीं किया।"

इतने में वहाँ एक बूढ़ी तेज़ी से चलती हुई आयी और कहने लगी "क्या बात है? सब यहीं क्यों इकट्ठे बैठे हो? ज़ोर की भूख लगी है। मेरे लिए भोजन का प्रबंध करो।"

स्वस्थ लौटी माँ को देखकर सत्कार बहुत ही खुश हुआ और कहा 'माँ जी, लंबे अर्से के बाद आपकी तबीयत अब ठीक हुई। आपको इस हालत में देखकर बता नहीं सकता, मैं कितना खुश हूँ।" अपनी पत्नी की ओर मुड़कर उसने, उससे कहा "माँ के लिए शीघ्र भोजन का प्रबंध करो।" सत्कार की पत्नी उठकर जाने ही वाली थी कि वह आश्चर्य-भरे स्वर में चिल्ला पड़ी "यह क्या? हमारा घर पूरा का पूरा बदल गया है। अब मुझे ढूँढना होगा कि रसोई-घर कहाँ है?"

सत्कार के साथ-साथ वहाँ उपस्थित सबों ने देखा कि घर अब एक अद्भुत भवन के रूप में परिवर्तित हो गया। वे देखना चाहते थे कि बाहर से यह भवन कैसे दिखेगा। सब के सब घर के बाहर दौड़े-दौड़े आये।

तब कौशिक इस आकस्मिक घटना को देखकर रो रहा था और आँसू पोंछ रहा था। सत्कार के इस भाग्य को देखकर वह ईर्ष्या से जला जा रहा था।

बेताल ने राजा को यह कहानी सुनायी और कहा "राजन्, इसमें कोई संदेह नहीं कि बैरागी के पास अद्भुत शक्तियाँ हैं। किन्तु ऐसा लगता है कि उसे अपनी शक्तियों पर आवश्यकता से अधिक विश्वास है। वह इस भ्रम में है कि मैं संपूर्ण शक्तिवान हूँ और मेरा वर-बाण किसी भी स्थिति में खाली नहीं जायेगा। उसने बड़े ही आत्मविश्वास के साथ कहा कि उसकी गोली से दो वर लभ्य होंगे। उनमें से एक से सुख मिलेगा और दूसरे से अन्य को दुख पहुँचेगा। उसने अपनी इस गोली का यह प्रभाव भी सत्कार को स्पष्ट

बताया। उसने साफ़-साफ़ बताया भी था कि दोनों वर अपने आनंद के लिए ही माँगे जाएँ तो इससे हानि व अनर्थ होंगे। किन्तु सत्कार ने, दोनों वर अपने आनंद के लिए ही माँगे। इससे न ही कोई अनर्थ हुआ, न ही कोई हानि पहुँची। दोनों वरों की प्राप्ति हुई। इससे क्या यह स्पष्ट नहीं होता कि बैरागी को अपनी अद्‌भुत शक्तियों पर जो विश्वास है, वह आधारहीन, खोखला व शुष्क है। मैं तो दावे के साथ कहता हूँ कि इससे बैरागी की पोल खुल गयी। वह अपमानित हुआ। उसकी अद्‌भुत शक्तियाँ असफल हुईं। अब सत्कार की रही बात। उसने बैरागी की चेतावनी की परवाह क्यों नहीं की? क्या उसे बैरागी की शक्तियों में विश्वास नहीं था? उसकी चर्या को देखते हुए यही समझना पड़ता है। जानते हुए भी मेरे संदेहों को दूर नहीं करोगे तो तुम्हारा सर फट जायेगा।''

राजा विक्रमार्क ने कहा ''जो हुआ, उसे देखते हुए निष्कर्ष यह निकलता है कि बैरागी व सत्कार दोनों धर्म-बद्ध हैं। अधर्म करने का उनका कोई विचार नहीं। भिक्षा नहीं दी, उल्टे बैरागी का अपमान किया कौशिक ने। अगर बैरागी चाहता तो स्वयं उसे शाप दे सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। किन्तु किसी दूसरे के द्वारा कौशिक को दुख पहुँचाने का उसका उपाय अवश्य ही श्लाघनीय नहीं है। मगर उसका सत्कार से कहना कि एक वर से अपना सुख माँगो और दूसरे वर से अन्य का दुख माँगो, केवल उसके धर्म-गुण की परीक्षा के लिए किया गया प्रयत्न मात्र है। सत्कार ने इसकी असलियत जानी, इसीलिए परिवार के सदस्यों के विरोध के बावजूद, अपने ही सुख के लिए दोनों वर माँगे। वे वर सफल हुए। इसलिए यह समझना ग़लत है कि बैरागी इस भ्रम में था कि उसकी शक्तियाँ अद्‌भुत हैं। अब रहा कौशिक का व्यवहार। संसार में ऐसे ईर्ष्यालू अनगिनत हैं। अपने घर के आम के पेड़ में एक बौंडी हो और दूसरे के आम के पेड़ में दो बौंडियाँ हों तो ऐसे लोगों को अपार दुख होता है। वे जन्म से ही शापग्रस्त हैं।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित उड़ गया और पेड़ पर जा बैठा।

(आधार - श्याम प्रसाद मित्रा की रचना)

होशियारी का झूठा दावा

गौरी अपने आप को बड़ी ही होशियार समझती थी। अपनी बहू पद्मा को खूब सताती थी। पद्मा कोई अच्छी साड़ी पहनने लगती तो कहती "नहीं बहू, वैसे ही तुम बड़ी सुंदर लड़की हो। नज़र लग जायेगी।" बहू कोई पकवान बनाने का प्रयत्न करती तो कहती "अरी मेरी पगली बहू, यह सब खाकर अपनी तबीयत क्यों ख़राब करती हो। तुम्हारी तबीयत ख़राब हो जाए और मैं चुपचाप देखती रहूँ। ऐसा मत कर बहू।"

पद्मा देवी-देवाताओं की पूजाएँ करती रहती थी। उसने एक बार व्रत रखना चाहा। गौरी से यह सहा नहीं गया। उसने पद्मा से कहा "मेरी नासमझ बहू। इन व्रतों और मनौतियों से अच्छा यही है कि निर्मल भक्ति से उस भगवान की आराधना करें। भगवान के आशीर्वाद पाने का यही उत्तम मार्ग है। उपवास रखने के कारण ही, ध्यान में मग्न रहने के कारण ही, महर्षि भगवान के सान्निध्य में जा पाये। वे उत्तम भक्त कहलाये गये।"

पद्मा ने ताड़ लिया कि सास नहीं चाहती कि वह व्रत रखे। सास का विरोध करने का साहस उसमें नहीं था, इसलिए मन ही मन यह कहकर संतृप्त हुई "ठीक ही तो है। भक्ति ही काफ़ी है। व्रतों और मनौतियों की कोई आवश्यकता नहीं है। इस क्षण से निश्चल मन से उस सर्वेश्वर का ध्यान करूँगी और यही मेरी पूजा होगी।" वह ऐसा ही करने लगी।

कुछ सालों के बाद बूढ़ी गौरी मर गयी। यमदूत उसे पहले स्वर्ग में ले आये।

गौरी को पहले से ही इस बात का गर्व था कि मैं बहुत ही होशियार हूँ। यमदूतों को उसे स्वर्ग में ले जाते हुए देखकर उसका

गर्व दुगुना हो गया। किन्तु यमदूतों ने एक क्षण भर के लिए ही उसे स्वर्ग में रहने दिया। वे उसे नरक में ले गये।

गौरी ने यमराज से पूछा "यह सब क्या हो रहा है? पहले मैं स्वर्ग ले जायी गयी और क्षण भर में नरक लायी गयी। ऐसा क्यों किया गया? यह धाँधली कैसी?"

यमराज ने शांत हो कहा "गौरी, तुमने अपने जीवन में जो पुण्य कमाया, वह एक क्षण मात्र के लिए स्वर्ग में रहने का तुम्हें अधिकार प्रदान करता है। अब रही तुम्हारे पापों की बात। ये पाप धुल जाएँ, इसके लिए तुम्हें सौ साल नरक में रहना पड़ेगा।" यमराज का निर्णय सुनते ही गौरी ने कहा "यह कैसा न्याय है? ऐसे क्या पाप मैंने कर दिये, जिसके लिए मुझे सौ सालों तक नरक में रहना पड़ेगा? मेरी एक ही बहू है, जिसे क्या कभी मैंने कष्ट पहुँचाया? क्या उससे कभी कड़वी बात की? उससे ऊँचे स्वर में क्या कभी बोली?"

यमराज ने हँसकर कहा " यह सच है कि तुमने अपने जीवन-काल में कभी कड़वी बात नहीं की। किन्तु त्रिकरण मनोवाक्काय कर्मों में मन का स्थान प्रथम है। तुममें उस मन की ही शुद्धि का लोप है। मन के कलुष को छिपाकर ऊपर से प्यार भरी बातें जो करते हैं, उनकी मधुरवाणी दग़ाबाज़ की निशानी है। तुम्हारी कलुषित बुद्धि ने आख़िर तुम्हारी बहू को व्रत भी रखने नहीं दिया। अपनी आदत के मुताबिक तुमने अपना क्रोध छिपा लिया और उस अबोध स्त्री को निश्चल ध्यान का पाठ पढ़ाया। उसने तुम्हारे कहे अनुसार ही भगवान का ध्यान किया और तद्वारा उसकी आराधना की। इससे उसने बहुत पुण्य-कमाया।" "क्या यह सच है? मैं तो तब उसका महत्व समझ नहीं पायी" चकित गौरी ने कहा।

"तुम्हारी बहू इतनी पुण्यात्मा बन पायी, इसके परोक्ष कारक तुम्हीं हो। इसीलिए तुम्हें क्षण भर के लिए ही स्वर्ग में रहने की योग्यता प्राप्त हुई। इह और परलोक दोनों से तुम वंचित रह गयी। अपने को होशियार समझकर तुमने अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार ली।" यम ने कहा।

तिरुवनंतपुरम् की ओर

शब्द : मीरा नायर ◆ चित्र : गौतम सेन

पेरियार आदि नदियां अपने साथ तेलयुक्त कीचड़ बहा कर लाती हैं, जो समुद्र में तलछट की तरह जमा हो जाता है. किंतु मानसून के आरंभ में यह तलछट हिल कर पानी में घुल जाती है और समुद्र में कुछ आगे जा कर लंबी-लंबी मेंड़ों के आकार में फिर से जमा हो जाती है. इन्हें कीचड़ी मेंड़ें (मड बैंक्स) कहते हैं. ये समुद्र में बंद का-सा काम करती हैं और इनके व तट के बीच का जल तूफानी मौसम में भी शांत और सुरक्षित बना रहता है.

पुराने समय में अरब नाविक मलबार तट की इन कीचड़ी मेंड़ों का लाभ उठा कर यहां अपनी नावों का लंगर डालते और मानसूनी तूफानों से अपना बचाव करते थे.

अलप्पुझा से कोल्लम् ८५ कि.मी. दूर है. रास्ता समुद्री खाड़ियों (बैक वाटर) में से हो कर है, जो कमलों और जलपक्षियों से सुशोभित हैं. बीच में पड़ता है अंबलपुझा का श्रीकृष्ण मंदिर. यहां प्रसाद में बांटी जानेवाली खीर अपने स्वाद के लिए मशहूर है.

ओट्टम् तुल्लल्

'ओट्टम् तुल्लल्' नाम की कलाविधा का जन्मस्थान यही है. कहा जाता है कि कवि कुंजन नंबियार 'चाकियार कुतु' में मिझावि बजाया करते थे. ('चाकियार कुतु' एक प्रकार का कथावाचन है, जिसमें चाकियार समुदाय का कोई कलाकार पुराणों के श्लोक पढ़ कर उनकी व्याख्या करता है और बीच-बीच में वर्तमान स्थिति पर विनोदपूर्ण टिप्पणियां भी करता जाता है. मिझावी तालवाद्य के रूप में बजाया जानेवाला तांबे का कलसा है.) एक बार ऐसा हुआ कि कथा चल रही थी और कुंजन नंबियार ऊंघ गये. चाकियार कलाकार ने इस पर उन्हें झिड़का. कवि को बड़ा अपमान अनुभव हुआ और उन्होंने 'ओट्टम् तुल्लल्' का सृजन किया. यह विधा 'चाकियार कुतु' से तनिक भिन्न होती है, क्योंकि इसमें नृत्य भी सम्मिलित है.

श्रीकृष्ण मंदिर के इसी मंडप में ओट्टम् तुल्लल् का पहला सार्वजनिक प्रदर्शन हुआ.

कुंजन नंबियार की मिझावि

कुंजन नंबियार जो मिझावि बजाया करते थे, उसे इस साल जून में श्रीकृष्ण मंदिर में ठीक उसी स्थान पर स्थापित किया गया है, जहां पर उन्होंने 'ओट्टम् तुल्लल्' का प्रथम बार प्रदर्शन किया था.

अंबलपुझा के दक्षिण में तट पर बसा हुआ है कायंकुलम्. यहीं पर जनमा था 'केरल का राबिन हुड' कहलानेवाला कायंकुलम् कोच्चुण्णि, जो मालदार लोगों को लूटता और गरीबों की मदद करता था. अठारहवीं सदी के इस डाकू के अस्त्र-शस्त्र आज भी यहां की जेल में रखे हुए हैं.

ऐतिहासिक नगर कोल्लम् अष्टमुडि झील के किनारे बसा हुआ है. कोल्लम् को अंग्रेजी शासन में कोइलान कहा जाता था. यह मलबार तट के सबसे प्राचीन बंदरगाहों में से है और बहुत पुराने जमाने से यहां विदेशी जहाज खास कर काली मिर्च खरीदने के लिए आया करते थे. संस्कृत में काली मिर्च का एक नाम 'कोलम्' है, जो इसी शहर पर से पड़ा है.

तेरहवीं सदी ई. में चीनियों ने कोल्लम् को मलबार तट पर अपने समुद्री व्यापार का मुख्य अड्डा बनाया था. कोल्लम् तब स्वतंत्र राज्य था और उसके तथा चीन के बीच राजदूतों का आदान-प्रदान हुआ करता था.

कोल्लम् जिले की पवित्र शास्तांकोट्टा झील केरल की एकमात्र मीठे पानी की झील है. इसके तट पर एक प्राचीन मंदिर है. उसकी स्थापना श्रीराम ने की थी, ऐसी मान्यता है.

अलप्पुझा जिले की तटपट्टियां रुपहली रेतवाली हैं, तो कोल्लम् की काली ! यहां की रेत में इल्मेनाइट नामक विकिरणशील खनिज का होना इसका कारण है. यहां के तट पर मिलनेवाला दूसरा खनिज है बाक्साइट.

काली मिर्च, जिसे खरीदने दूर देशों से व्यापारी आते थे.

कोल्लम् से २० कि.मी. दक्षिण चल कर हम पहुंचते हैं अंजेंगो (अंचे तेंगु). यही वह स्थान है जहां ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने मलबार तट पर अपनी पहली व्यापारिक कोठी कायम की. अंग्रेज उपनिवेशकों ने यहां पर जो किला बनाया, वह आज भी मौजूद है.

श्री नारायण गुरु

अंजेंगो के नजदीक ही है वर्कला, जो तीर्थ भी है और स्वास्थ्यवर्धक स्थल भी. यहां गरम पानी के सोते हैं, जो तट के साथ सीधी उठी हुई चट्टानों से फूटते हैं.

वर्कला की शिवगिरि पहाड़ी पर श्री नारायण गुरु ने निर्वाण पाया. वे आधुनिक भारत के महान समाज-सुधारकों में से थे. "एक जाति, एक धर्म, एक भगवान"....यह था उनका संदेश. उन्होंने समझाया कि मनुष्य चाहे किसी भी धर्म का अनुयायी हो, उसे निरंतर आत्मसुधार करना चाहिए. नारायण गुरु के जीवन और उपदेशों से दबी-कुचली जातियों में नयी चेतना आयी.
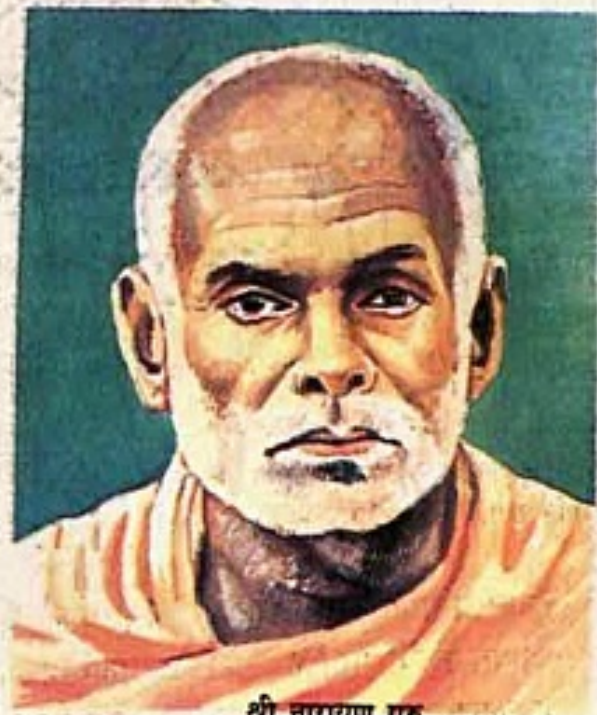
वर्कला का जनार्दन मंदिर हिंदुओं का पवित्र तीर्थस्थान है. इसमें विष्णु भगवान की पूजा 'वर्कल अप्पन्' (वर्कला के पिता) के रूप में होती है.

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम् (त्रिवेन्द्रम्) वर्कला से ४८ कि.मी. दक्षिण में स्थित है. यह नाम तीन शब्दों को मिला कर बना है – तिरु + अनंत + पुरम्. 'तिरु' का अर्थ है – पवित्र. (वह संस्कृत के 'श्री' का समानार्थक है.) अनंत अर्थात् शेषनाग और पुरम् (पुर) यानी नगर. भगवान अनंतपद्मनाभस्वामी का मंदिर इस शहर का केंद्र हैं. मंदिर के साथ पद्मसरोवर नाम का पक्का तालाब है.

अंजेंगो का किला

अनंतपद्मनाभस्वामी का मंदिर, तिरुवनंतपुरम्

राजा मार्तांड वर्मा ने तिरुवनंतपुरम् को ट्रावंकोर (तिरुवितांकुर) राज्य की राजधानी बनाया और अपना समूचा राज्य भगवान अनंतपद्मनाभ (विष्णु) के चरणों में अर्पित कर दिया. तब से ट्रावंकोर-नरेश अपने को बड़े गर्व से 'अनंतपद्मनाभदासन्' कहते थे. वर्तमान मंदिर १८ वीं सदी में बना था. कहते हैं, ४,००० राज-मिस्त्रियों, ६,००० मजदूरों और १०० हाथियों की मेहनत से सिर्फ छह महीनों में मंदिर बन कर तैयार हो गया. इसमें शेषनाग पर लेटे भगवान विष्णु की मूर्ति है, और वह 'अनंतपद्मनाभस्वामी' कहलाती है. मूल मंदिर के चारों ओर चौड़ा गलियारा है, जिसमें पत्थर के ४,००० खंबे हैं. हर खंभे पर एक नारीमूर्ति उकेरी गयी है और उसके हाथ में दीया है. जब शाम को ये दीये सुलगा दिये जाते हैं, गलियारा अलौकिक आभा से जगमगा उठता है. मंदिर के प्रवेशद्वार तक पहुंचने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं. प्रवेशद्वार के ऊपर सतमंजिला गोपुर है.

तिरुवनंतपुरम् का चिड़ियाघर देश का दूसरे नंबर का सबसे पुराना चिड़ियाघर है. (सिर्फ कलकत्ता चिड़ियाघर इससे पुराना है.) श्री चित्रा आर्ट गैलरी में राजपूत और मुगल शैली के लघुचित्रों (मिनिएचर) के अलावा केरल के यशस्वी सपूत राजा रवि वर्मा के बनाये तैलचित्र हैं. तिब्बती, चीनी, जापानी और बाली चित्रकला के सुंदर नमूने भी यहां पर हैं.

तिरुवनंतपुरम् से १२ कि.मी. की दूरी पर अर्धचंद्र के आकार की एक खाड़ी पर कोवलम् तटपट्टी है, जो भारत के सबसे रमणीक समुद्रतटों में गिनी जाती है. भारी चट्टानें ऊंची-समुद्री लहारों से इस तटपट्टी की रक्षा करती हैं.

मलयालम् के रामकथा-काव्य 'रामकथापाट्टु' के कवि अय्यापिळ्ळा आशान् कोवलम् में ही जनमे थे. पूवर् केरल और तमिलनाडु की सीमा पर है. नेय्यार नदी यहां पर अरब सागर में गिरती है. इस नदी का उद्गम ९७० मीटर ऊंचे अगस्त्यकुडम् पहाड़ों में है.

अजय की इच्छा

चंद्रपुर राज्य का राजा था धर्मसेन। नाम के अनुरूप ही धर्मात्मा था। महाशूर भी था। अपनी बात से कभी मुकरता नहीं था। अपने वचन का पक्का था। उसके शासन-काल में प्रजा निश्चिंत जीवन बिता रही थी।

हिमगिरि, चंद्रपुर का पड़ोसी राज्य था। उन दोनों राज्यों के बीच शत्रृता बहुत ही वर्षों से चली आ रही थी। धर्मसेन के पिता और दादाओं ने इस शत्रृता को सदा के लिए समाप्त कर देने की बहुत कोशिश की। उन्होंने हिमगिरि के राजा विक्रम वर्मा से स्नेहपूर्ण संबंध स्थापित करने के कितने ही प्रयत्न किये। परंतु विक्रमवर्मा ने इस दिशा में कोई दिलचस्पी नहीं दिखायी, जिससे शत्रृता बनी रही, बढ़ती गयी।

धर्मसेन चाहे तो विक्रमवर्मा को बहुत ही आसानी से हरा सकता था, किन्तु उसने ऐसा कोई प्रयत्न नहीं किया। विक्रमवर्मा तो चंद्रपुर को हस्तगत करने के लिए हमेशा योजनाएँ बनाता रहता था।

साल गुज़र गये। क्रमशः विक्रमवर्मा ने अपनी सेना के बल की बुद्धि की और धर्मसेन पर युद्ध की घोषणा कर दी। धर्मसेन चाहता नहीं था कि यह युद्ध हो, परंतु जब विक्रमवर्मा ने स्वयं युद्ध की घोषणा की तो उसने निर्णय लिया कि डटकर शत्रु का सामना किया जाए और उसे हराकर अपना पराक्रम प्रमाणित किया जाए। चंद्रपुर व हिमगिरि सैनिकों ने युद्ध-क्षेत्र में अपना-अपना पराक्रम दिखाया। घमासान लड़ाई हुई किन्तु कोई जीत नहीं पाया, इसलिए सूर्यास्त तक वे अपने-अपने शिबिरों में लौटे।

दूसरे दिन जो लड़ाई हुई, उसमें एक शत्रु सैनिक के फेंके भाले से धर्मसेन घायल हुआ। उस भाले से उसके कंधे को बड़ी चोट आयी। वह युद्ध-क्षेत्र से अपना शिबिर लौटा। वैद्यों

वेंकटाचल शर्मा

ने उसके घावों की मरहमपट्टी की।

इस घटना से धर्मसेन चिंतित होने लगा। वह सोच ही रहा था कि अब क्या किया जाए, सेनाधिपति वहाँ आया और कहा "महाराज, आप दुखी मत होइये। आप घायल हैं, इसलिए आपका युद्ध-क्षेत्र में आना संभव नहीं है। मैं अपनी समस्त शक्तियाँ जुटाकर विक्रमवर्मा को हराऊँगा।"

सेनाधिपति उत्तम राजभक्त था। राजा को मालूम था कि सेनाधिपति धैर्यवान है, पर युद्ध-तंत्रों से अपरिचित है। किन्तु इस विषम परिस्थिति में वह करे भी तो क्या करे। सिर हिलाकर चुप रह गया।

उस दिन रात को चंद्रपुर का एक सैनिक शिबिर में चंद्रसेन से एकांत में मिलने आया। उसने कहा "प्रभू, मेरा नाम अजय है। हाल ही में आपकी सेना में भर्ती हुआ हूँ। आपके घायल होने का समाचार मुझे मालूम हुआ। इस स्थिति में आप शत्रु राजा विक्रमसेन से युद्ध नहीं कर पायेंगे। मुझे वह मौक़ा दीजिये। किसी प्रकार एकांत में उससे भिड़ूँगा और उसे मार डालूँगा।"

एक सामान्य सैनिक की ये बातें सुनकर धर्मसेन को आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा कि यह सैनिक कैसे अकेले ही विक्रमवर्मा का सामना कर पायेगा। अजय ने ताड़ लिया कि महाराज क्या सोच रहे हैं। तब उसने कहा "प्रभू, बचपन से ही अपनी दादी की कही कहानियाँ सुन-सुनकर एक इच्छा मेरे मन में स्थिर हो गयी। उस इच्छा की पूर्ति के लिए ही मैंने बहुत परिश्रम करके युद्ध-विद्याएँ सीखीं। अपना पराक्रम दिखाकर, आपकी प्रशंसा पाने के उद्देश्य से ही सेना में भर्ती हुआ हूँ।"

"अच्छी बात है। क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम्हारी यह इच्छा क्या है?" राजा ने पूछा।

अजय ने कहा "राजन्, अपने मन की इच्छा विक्रमवर्मा का अंत कर देने के बाद ही बताऊँगा। पर आपको वचन देना होगा कि मेरी इच्छा की पूर्ति होगी।"

धर्मसेन ने क्षण भर सोचने के बाद कहा "अजय, तुम सचमुच विक्रमवर्मा को हरा सकोगे तो तुम्हारी हर इच्छा पूरी होगी। अपने आराध्य धर्मदेवता को साक्षी मानकर वचन देता हूँ।" फिर उसने सेनाधिपति को बुलाया और विषय बताया।

दूसरे दिन युद्धक्षेत्र में अजय ने विक्रमवर्मा

के साथी सिपाहियों को भगाया और उसका सामना किया। विक्रमवर्मा उसकी वीरता व धैर्य को देखकर डगमगा गया, किन्तु अपनी पूरी शक्ति लगाकर उससे लड़ने लगा। पर वह अजय का सामना नहीं कर पाया। जब उसे ज्ञात हुआ कि उससे बचना असंभव है तो वह पीछे मुड़कर भागने लगा। भागते हुए विक्रमवर्मा का सिर काट दिया, अजय ने।

अपने राजा की मौत को देखकर हिमगिरि के सैनिक छिन्नाभिन्न हो गये। अजय की विजय का समाचार पाकर धर्मसेन बहुत खुश हुआ। उसने गले लगकर अजय का अभिनंदन किया और कहा "इस संतोषजनक समय पर अपने मन की इच्छा ज़ाहिर करो। उस इच्छा की पूर्ति करके अपना वचन निभाऊँगा।"

"प्रभू, मैं राजकुमारी से विवाह करना चाहता हूँ। उससे मेरा विवाह संपन्न कीजिये" अजय ने अपनी इच्छा व्यक्त की।

अजय की इच्छा जानकर राजा दुविधा में पड़ गया। प्रियंवदा उसकी इकलौती पुत्री है। उसका विवाह शरश्चंद्र राज्य के राजकुमार वसंतसेन के साथ पक्का हो चुका था। परंतु हाँ, जनता को अब तक यह बात बतायी नहीं गयी। निर्णीत विवाह रद्द किया भी नहीं जा सकता और अजय को दिये वचन से वह पीछे भी नहीं हट सकता। धर्मसेन ने अपनी दुविधा को ज़ाहिर होने नहीं दिया। वह उसे अंत:पुर में ले गया और उसका यथोचित आदर-सत्कार किया।

उस दिन रात को राजा धर्मसेन ने अपनी पुत्री प्रियंवदा को स्थिति बतायी और कहा "तुम्हारा विवाह अजय से करावूँ तो वसंतसेन को दिये वचन का भंग होगा। वसंतसेन से शादी कराऊँ तो अजय को दिये वचन का पालन नहीं कर पाऊँगा।"

प्रियंवदा बहुत ही अक़्लमंद थी। शासन

संबंधी विषयों में वह अपने पिता को सलाहें दिया करती थी। उसने अपने पिता को ढाढ़स बंधाते हुए कहा "पिताश्री, इस समस्या का परिष्कार मैं स्वयं ऐसा करूँगी, जिससे किसी को ठेस न पहुँचे। आपके वचन से मुकर जाने की परिस्थिति उत्पन्न नहीं होगी।"

दूसरे दिन सुबह प्रियंवदा ने, अपनी सहेली वीणा को अपने आभूषणों से सजाया और उसे सविस्तार बताया कि उसे क्या करना होगा। वीणा, अजय के कक्ष में गयी। राजकुमारी की तरह सुसज्जित उसे देखकर अजय ने सोचा कि यही राजकुमारी है।

वीणा ने उससे कहा "महाराज से आपने बताया कि आप राजकुमारी से विवाह करना चाहते हैं। क्या यह सच है?"

यह प्रश्न सुनकर अजय बहुत ही खुश हुआ और बोला "हाँ राजकुमारी, यह सच है। मैंने आज तक किसी राजकुमारी को देखा तक नहीं। आप तो मेरी दादी की कहानियों में वर्णित राजकुमारी जैसी ही हैं। मैं क्षत्रिय हूँ और कितनी ही क्षत्रियोचित विद्याएँ सीखीं। आज मैं राजकुमारी से विवाह करने जा रहा हूँ तो इसका पूरा श्रेय मेरी दादी को ही जाता है।" कहकर उसने एक क़दम आगे बढ़ाया।

वीणा ने मुस्कुराते हुए अजय को आगे बढ़ने से रोकते हुए कहा "एक महावीर से मेरा विवाह होनेवाला है। मेरा जन्म धन्य हो गया। शीघ्र ही हमारा विवाह अवश्य ही संपन्न होगा।" कहकर वहाँ से चली गयी।

प्रियंवदा से धर्मसेन ने विषय जाना तो कहा "पुत्री, इस अजय ने बलशाली शत्रु राजा से हमारे राज्य की रक्षा की। ऐसे वीर से, वीणा को राजकुमारी बताकर विवाह रचाना संगत होगा? यह तो मेरा वचन-भंग ही हुआ ना?"

"ऐसी कोई बात नहीं पिताश्री। उस महावीर की इच्छा मात्र है कि किसी राजकुमारी से विवाह करूँ। अब आप वीणा को गोद लेनेवाले हैं। गोद ली गयी पुत्री तथा जन्मी पुत्री एकसमान अधिकार रखती हैं। यह कदापि शास्त्र-विरुद्ध नहीं है।" प्रियंवदा ने अपनी दलील पेश की।

धर्मसेन ने, वीणा को गोद ली और एक महीने के अंदर ही उसकी शादी बड़े वैभव के साथ अजय के साथ करा दी।
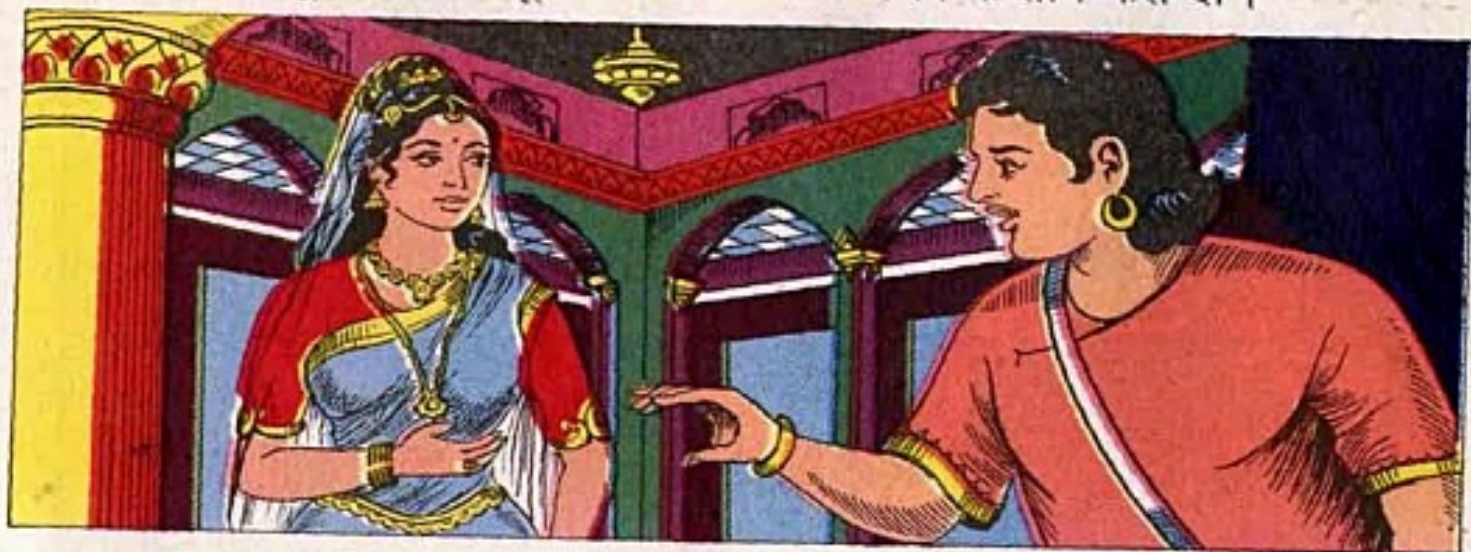
चन्दामामा
सुवर्ण रेखाएँ
६
रोबोट का हिसाब
अंगारक ग्रह ई.स. २००१
ऐ भूलोकवासियो, यहाँ रोबोट अंतरिक्ष में चलनेवाले मोटर-गाड़ियों का निर्माण करते हैं।
५४ रोबोट यहाँ हर दिन ५४ मोटर-गाड़ियाँ बनाते हैं।
एक एक अल्फा रोबोट दो गाड़ियाँ बनाता है।
दो बीटा रोबोट तीन गाड़ियाँ बनाते हैं।
तीन गामा रोबोट हर दिन एक गाड़ी बनाते हैं।
क्या अब आप बता सकते हैं कि यहाँ कितने अल्फा, बीटा, गामा रोबोट काम पर लगे हुए हैं?
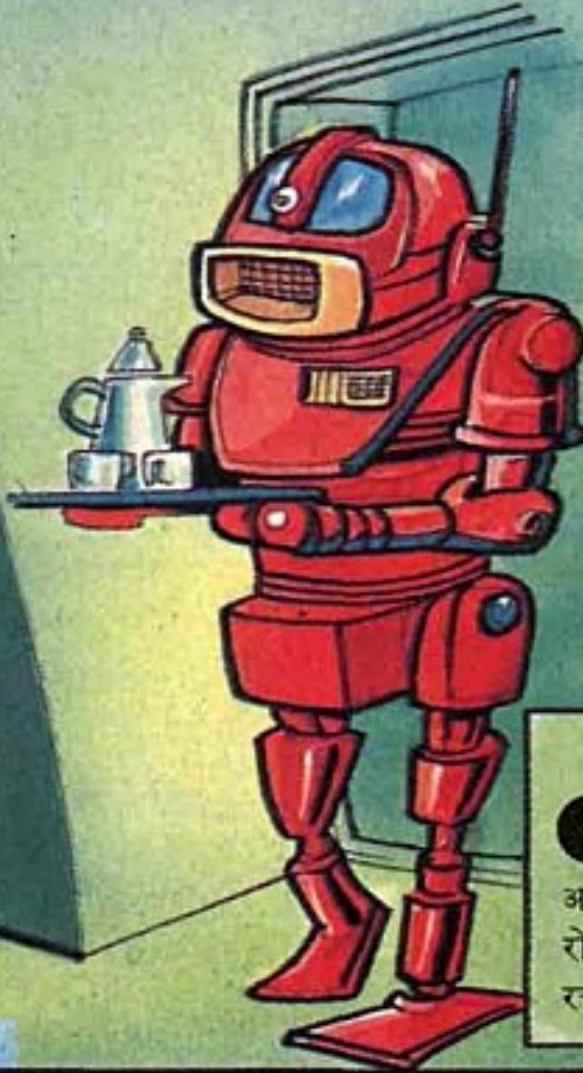
सुवर्ण रेखाएँ
प्रश्नावली
१ रोबोट नामक शब्द जेक शब्द से आया हुआ है। रोबोट का अर्थ है दानवृत्ति अथवा कठिनतम काम। क्या आप जानते हैं कि रोबोटा नामक इस शब्द का परिचय हमें किस रचयिता ने कराया?
२ आजकल कुछ देशों में बन रहे माग्लेव ट्रैन्स, नामक रेल-गाड़ियाँ हर घंटे में ५०० कि.मी. की गति से दौड़ सकती हैं। साधारण रेलगाड़ियों के लिए आवश्यक व मुख्य सामग्री इनमें नहीं है। यह क्या है?
३ कोई ऐसा रंग नहीं, जो रंगीन दूरदर्शन पर नही दिखता। किन्तु ऐसे रंगीन इंद्रधनुष के आविष्कार के लिए टी.वी. सेट तीन मुख्य रंगों को ही उपयोग में लाता है। वे मुख्य रंग कौन-से हैं?

2000 ??
५ चार सालों में एक बार 'लीप' साल आता है। साल को चार से विभक्त करने से शेष बचे बिना बराबर हो जाए तो वही 'लीप' साल है। किन्तु १०० से विभक्त किये जानेवाले १८००, १९००-२१०० वें जैसे शताब्दी वर्ष लीप साल नहीं हैं? तो फिर २००० वें वर्ष की क्या बात है?
४ चकाचौंध बिजली है, यह साबित करने के लिए एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा राजनीतिज्ञ ने अपने प्राणों की भी परवाह किये बिना अनुसंधान किया। १७५२ में उन्होंने गरजते हुए मेघों की ओर एक पतंग उड़ाया। उस पतंग के धागे को बिजली के डिटेक्टर से जोड़ा। उस वैज्ञानिक का क्या नाम है?
७ मेरी षेल्ली ने अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास 'फ्रांकेनस्टिन' में लिखा कि मानव-रूप की सृष्टि के लिए, विविध मानव-अवयवों को एक साँचे में ढाला जाता है। उन्होंने इस क्रिया का वर्णन भी किया। जानते हैं, इस उपन्
के 'फ्रांकेनस्टिन' कौन थे ?
6 'प्लेमसोल लैन' नौकाओं से संबंधित है। वह कहाँ है?

रोबोट का चित्र खींचना सीखिये

रोबोट की तस्वीर खींचना बहुत ही आसान है। उस तस्वीर को आसान नलियों में अलग कीजिये। यह पद्धति यहाँ दिखायी गयी।

१. पहले अस्थिपंजर का चित्र खींचिये।

२. अस्थिरपंजर की - मांस-पेशियाँ खींचिये। छाती, पेट, पाँव, हाथ में नलियाँ डालिये और सिर के भाग को गोलाकार में खींचिये।

३. अब अस्थिपंजर की रेखाओं को मिटा दीजिये। मांस-पेशियों व जोड़ों की रेखाएं खींचिये।

४. अब अंतिम सजावट कीजिये। आसानी से चित्र खींच लिया। है ना?

५. रोबोट की जगह पर कौबाय का चित्र बनाना चाहते हों तो दूसरे चित्र के पास जाइये और यों पहनावा पहनाइये। उसके चेहरे पर हँसी जो है, चित्रित करना न भूलिये। हँसी ही हमें मनुष्य बनाती है।

इंद्र की सलाह के अनुसार अर्जुन ने निश्चय किया कि शिव की पूजा करूँगा और उनके दर्शन करूँगा। वह आगे बढ़ा तो उसने वहाँ एक अत्यंत मनोहर वन देखा। उसमें जो पेड़ थे, वे बहुत ही सुँदर थे। फूलों से सुगंधि आ रही थी। अर्जुन को लगा कि शिव की पूजा करने के लिए यह वन बहुत ही उपयुक्त स्थल है।

अर्जुन ने चार मासों तक घोर तपस्या की। मूँछें और दाढ़ी बढ़ गयीं। उसने ये चारों मास वल्कल वस्त्र ही पहने। इस घोर तपस्या के कारण दारुण गर्मी उत्पन्न हुई और पूरा वन धुएँ से घिर गया। तब वन में स्थित मुनि शिव के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि वे अर्जुन की इच्छा पूर्ण करें और उसकी तपस्या को रोक दें। शिव ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे अवश्य ही अर्जुन को वर देंगे और उसकी तपस्या को रोक देंगे।

मुनियों के चले जाने के बाद शिव ने किरात का वेष धारण किया। पार्वती तथा प्रमधों ने अपने अनुकूल वस्त्र पहने। सब मिलकर अर्जुन की तपस्या के स्थल पर संचार करने लगे।

इसी समय पर मूक नामक एक राक्षस सुवर के रूप में अर्जुन को मारने के लिए उसपर लपका। तपस्या में लीन अर्जुन ने धनुष और बाण लिये और उस सुवर को मारने उद्यत हुआ।

किरात का रूप धारण किये हुए शिव ने अर्जुन से कहा "उस सुवर को मैं मारूँगा। तुम उसे मारो मत।"

अर्जुन ने उसकी बातों की परवाह नहीं की और उसने उसपर अपना बाण चलाया। किरात ने भी उसपर अपना बाण चलाया। दोनों के बाण सुवर को लगे और वह मरकर

अपने निज स्वरूप में प्रकट हुआ ।

तब अर्जुन ने किरात से पूछा "तुम कौन हो? इस निर्जन वन में एक स्त्री के साथ क्यों घूम-फिर रहे हो? वह राक्षस मुझे मारने के लिए लपका तो तुमने क्यों बाण चलाया? मारना तो मुझे था । मेरी दृष्टि में यह आखेटक का धर्म नहीं । तुमने अधर्म किया, अतः मैं तुम्हें मार डालूंगा ।"

किरात वेषधारी शिव हँस पड़े और कहा "इस छोटी-सी बात पर इतना क्रोध क्यों ? यह तो हम जंगली आखेटकों का धर्म है । क्या मैं जान सकता हूँ कि इस निर्जन अरण्य में तुम क्यों आये? देखने में तुम नागरिक लगते हो, सुकुमार भी लगते हो । अब रही इस सुवर की बात । मैंने ही पहले उसे मारा । जिसको मैंने मारा, उसी को तुमने भी मारा । अपने बलशाली होने के दर्प में चूर होकर, मुँह में जो आया, बके जा रहे हो । उल्टे ग़लती मुझपर थोप रहे हो । अगर अपने बलवान होने का इतना गर्व है तो मुझसे युद्ध करो ।" यों शिव ने अर्जुन को भड़काया ।

अर्जुन क्रोधित होकर किरात पर लगातार बाण बरसाता रहा । किन्तु शिव ने उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया और बड़ी ही लापरवाही से कहा "ये भी कोई बाण हैं । क्या इससे अच्छे बाण नहीं हैं तुम्हारे पास? क्या युद्ध करने की तुम्हारी शक्ति इतनी सीमित है?"

अर्जुन को लगा कि अमोघ उन अस्त्र-शस्त्रों की भी परवाह न करनेवाला यह व्यक्ति अवश्य ही कोई महान होगा, जो बहुरुपिये के वेष में है । अगर साधारण किरात होता तो कभी का मर गया होता । अपनी शंका को निराधार समझते हुए वह पीछे हटे बिना लगातार बाणों की वर्षा करता रहा । थोड़ी ही देर में वे अक्षय तूणीर खाली हो गये ।

अग्निदेव से दिये गये इन अक्षय तूणीरों को खाली होते हुए देखकर अर्जुन की शंका और दृढ़ होती गयी । फिर भी उसने साहस नहीं छोड़ा और अपने गांडीव का अग्र भाग चुभोकर किरात को मार डालना चाहा । दूसरे ही क्षण गांडीव अदृश्य हो गया । फिर भी अर्जुन हताश नहीं हुआ । उसने अपनी तलवार किरात पर चलायी । तलवार के टुकड़े हो गये ।

अर्जुन के पास अब कोई हथियार नहीं

रह गया। किरात पर उसने पेड़ों की शाखाएँ फेंकीं। पत्थर फेंके। अर्जुन के किसी भी आक्रमण का प्रभाव किरात पर नहीं पड़ा। तब अर्जुन किरात से भिड़ गया और अपनी मुट्ठियों से मारने लगा। किरात ने भी अर्जुन को अपनी मुट्ठियों से मारा।

किरात के प्रहार से अर्जुन बेहोश हो गया। होश में आते ही उसने स्नान किया। मिट्टी से शिवलिंग बनाया और उसपर फूलों का गुच्छा रखा। थोड़ी देर तक आँखें बंद करके उसने पूजा की। जब आँखें खोलकर उसने किरात को देखा तो उसने देखा कि फूलों का वह गुच्छा उसके सिर पर है।

यह देखते ही पहले अर्जुन को आश्चर्य हुआ, पर बाद उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। अब वह जान गया कि जिस किरात से अब तक उसने युद्ध किया, वह कोई और नहीं, स्वयं शिव हैं। अर्जुन उनके पैरों पर गिरा और उनकी स्तुति की।

शिव ने उसकी भक्ति से संतुष्ट होकर कहा "अर्जुन, तुम जैसा शूर-वीर तीनों लोकों में नहीं है। तुम्हारी भक्ति से मैं बहुत प्रसन्न हुआ। तेजस्विता में तुम मेरे समान हो। अपना दिव्यास्त्र तुम्हें दे दूँगा। उसके प्रयोग और उसे स्वीकार करने की योग्यता केवल तुम्हीं में है। उसकी महिमा से तुम शत्रुओं को जीत सकोगे।" कहकर शिव अपने निजी रूप में प्रकट हुए।

अर्जुन, शिव के पैरों पर गिरा और अपने अज्ञान-भरे कार्यों के लिए क्षमा माँगी। शिव ने अर्जुन को आलिंगन में लिया और कहा "अर्जुन, पूर्व जन्म में तुम नर नामक ऋषि थे। हज़ारों वर्षों तक तुमने और नारायण नामक ऋषि ने बदरिकाश्रम में तपस्या की। तुम दोनों ने कितने ही दुष्ट

राक्षसों का संहार किया । देवेंद्र के पद की रक्षा की । उस काल में जो धनुष तुम्हारे पास था, वही अब तेरे हाथ में है । मेरी माया के कारण ही तुम्हारा गॉडीव व अक्षय तूणीर अदृश्य हो गये । अब कहो, तुम्हारी क्या-क्या इच्छाएँ हैं?''

''महेश्वर, भीष्म, द्रोण, कर्ण, दुर्योधन आदियों से मेरा युद्ध होनेवाला है । उन महावीरों को जीतने के लिए मुझे पाशुपतास्त्र, ब्रह्मशिरोनामास्त्र चाहिये । मुझे ये अस्त्र प्रदान करके कृतार्थ कीजिये ।''

शिव ने, अर्जुन को पाशुपतास्त्र के प्रयोग की तथा उसके उपसंहरण की विधियाँ मंत्र सहित बतायीं । उसे गॉडीव व अक्षय तूणीर पुनः प्राप्त हो गये । शिव पार्वती अदृश्य हो गये ।

अर्जुन को लगा कि उसमें अब अपूर्व शक्तियाँ निहित हैं । अब उसे पाशुपतास्त्र प्राप्त हो गया । ईश्वर का दर्शन-भाग्य प्राप्त हुआ । ईश्वर के स्पर्श से उसका शरीर पवित्र हुआ ।

इतने में लोकपालक इंद्र, यम, वरुण, कुबेर अपनी-अपनी पत्नियों के साथ वहाँ आये । उन सबने अपने-अपने अस्त्र उसे दिये । इंद्र ने अर्जुन को स्वर्ग में आने का आह्वान दिया । उसने कहा कि वहाँ आने पर और दिव्यास्त्र दूँगा ।

थोड़ी ही देर में अर्जुन को ले जाने के लिए इंद्र का रथ आया । सारथी मातलि ने अर्जुन से कहा ''इंद्र ने तुम्हारे लिए यह रथ भेजा है । वे इंद्र सभा में देवताओं, गंधर्वों, ऋषियों और अप्सरसाओं के साथ तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा में हैं ।''

अर्जुन को लगा कि इंद्र के रथ में बैठने की बात तो दूर, उसे छूने की भी उसकी योग्यता नहीं है । फिर भी इंद्र की आज्ञा है, इसलिए वह रथ में जा बैठा ।

रथ आकाश में उड़ा । राह में स्वय-प्रकाशमान राजर्षि, युद्ध में मृत शूर, सिद्ध, गंधर्व, अप्सरागण दिखायी पड़े । मातलि बताये जा रहा था कि वे कौन-कौन हैं ।

अजुर्न को अब अमरावती नगर दिखायी देने लगा । उसके बाह्य द्वार पर ऊँचा गोपुर दिखायी देने लगा । उसे देखकर अर्जुन बहुत ही प्रसन्न हुआ । नगर के अंदर नंदन वन में अप्सराएँ विहार कर रही थीं ।

अर्जुन का रथ जैसे ही अमरावती नगर में उतरा, देवताओं ने इंद्र की आज्ञा के

अनुसार उसका स्वागत-सत्कार किया। गंधर्व, सिद्ध, अप्सराओं ने उसके मंगलोपचार किये। नारद जैसे देवर्षियों ने अर्जुन को आशीर्वाद दिया। अर्जुन ने देवेंद्र के सुधर्म नामक सभा में प्रवेश किया।

वहाँ देवेंद्र भरी सभा में आसीन था। उसके चारों ओर गंधर्व स्तोत्र गा रहे थे। वेदघोष सुनायी दे रहा था। सिद्ध, चारण, मरुन्त, विश्वदेवता, अश्विन, आदित्य, वसु, रुद्र, ब्रह्मर्षि, राजर्षि सब के सब उपस्थित थे। इंद्र के सिर के ऊपर श्वेत छाता था। चंवर डुलाये जा रहे थे।

अर्जुन ने इंद्र के निकट जाकर प्रणाम किया। इंद्र ने उसे आलिंगन में लिया और उसे ले जाकर अपने सिंहासन के बग़ल के आसन पर बिठाया। अपने पुत्र अर्जुन को देखते हुए वह बहुत ही हर्षित हो रहा था। नारद ने वीणा को झंकृत किया। तुँबुर ने गाया। अप्सराओं ने नृत्य-प्रदर्शन किया।

फिर देवतागण इंद्र की आज्ञा के अनुसार अर्जुन को अतिथि-गृह ले गये। अर्जुन बहुत समय तक स्वर्गलोक में रहा और देवतास्त्रों के प्रयोग तथा उपसंहरण की विधियों से अच्छी तरह परिचित हुआ।

उस अवधि में इंद्र ने अर्जुन को चित्रसेन नामक गंधर्व द्वारा संगीत व नृत्य सिखलाया। यद्यपि अर्जुन स्वर्गलोक में था, सब प्रकार के सुखों का अनुभव कर रहा था, फिर भी उसे वनवास करते हुए अपने भाइयों, द्रौपदी तथा अपनी माता की याद बहुत सताती थी।
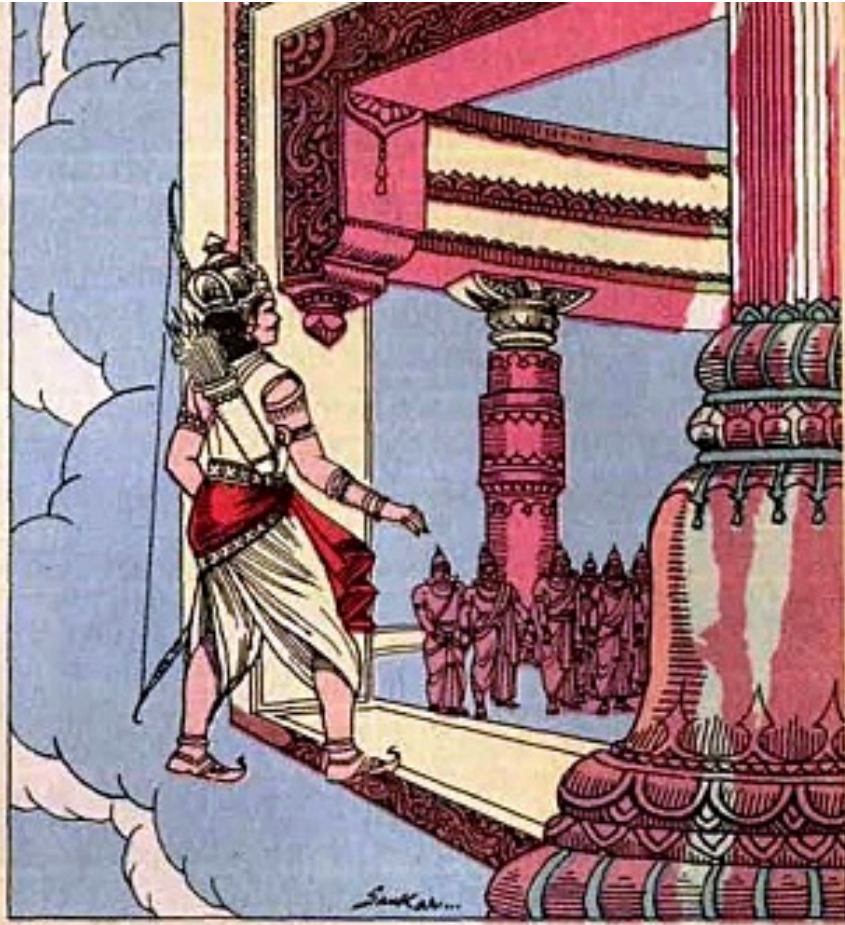
इंद्र इस ग़लतफ़हमी में पड़ गया कि अर्जुन, ऊर्वशी को चाहने लगा है। चित्रसेन को बुलाकर इंद्र ने उससे कहा "ऊर्वशी से कहो कि वह अर्जुन की इच्छा पूरी करे। यह भी कहना कि यह इंद्र की आज्ञा है।" चित्रसेन ने, ऊर्वशी को इंद्र की आज्ञा सुनायी। ऊर्वशी पहले से ही अर्जुन को चाहने लगी थी। इसलिए उसने इंद्र की आज्ञा को सहर्ष स्वीकार किया और खिली चाँदनी के दिन अर्जुन के अतिथि-गृह में गयी। अर्जुन ने उसके पैर छुये और पूछा "देवी, आपके आगमन का क्या कारण है? मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।" ऊर्वशी ने अपने आगमन का कारण बताया। अर्जुन ने भगवान का स्मरण करते हुए कान बंद कर लिये और कहा "माँ, आप मेरे

लिए कुन्ती देवी समान हैं। शची देवी जैसी हैं। हमारे मूलपुरुष पुरुरव की धर्मपत्नी हैं। मेरे लिए तो आप माँ समान हैं।''

ऊर्वशी ने कहा ''अर्जुन, इस देवलोक में हमारी पद्धतियाँ तुम्हारे लोक से भिन्न हैं। अतः अनावश्यक संदेहों में न फँसकर मेरी इच्छा की पूर्ति करो।''

तब अर्जुन ने ऊर्वशी से कहा ''माँ, आप देवी हैं। यह सच है कि आप देवियाँ कुछ भी कर सकती हैं और उनमें कोई खोट निकाल नहीं सकता। किन्तु मैं एक मानव हूँ। अतः आपसे किये जानेवाले कार्य मैं नहीं कर सकता। आप मेरे लिए माँ समान हैं। मुझसे असंभव आशा की पूर्ति की आशा मत रखिये। मुझे अपना पुत्र समझिये।''

आशा-भंग से ऊर्वशी क्रोधित हुई। उसने अर्जुन से कहा ''मानव, मैं स्त्री हूँ। स्वेच्छाजीवी हूँ। मैंने तुम्हें चाहा तो तुमने मुझे अपनाने से अस्वीकार कर दिया। यह मेरा घोर अपमान है। मैं तुम्हें शाप देती हूँ कि तुम नपुंसक बन जाओ। नपुंसक होकर अंतःपुर की स्त्रीयों के मध्य नाच-गानों से अपना समय बिताओ।'' यों शाप देकर वह वहाँ से चली गयी। अर्जुन ने बड़ी मुश्किल से वह रात गुज़ारी। सबेरे उसने चित्रसेन को रात की घटना का पूरा ब्योरा दिया। रात को ऊर्वशी का वहाँ आना, उसकी इच्छा का तिरस्कार करने के कारण उसे शाप देना आदि बातें सविस्तार बतायीं।

चित्रसेन द्वारा इन सारी बातों को सुनकर इंद्र, अर्जुन के पास आया और कहा ''अर्जुन, मैं जानता नहीं था कि तुम्हें अपने इंद्रियों पर इतना निग्रह है। महर्षियों में भी ऐसे निग्रही बहुत कम होते हैं। ऊर्वशी के शाप पर तुम भयभीत मत होना। तुम लोगों को एक वर्ष तक अज्ञातवास करना पड़ेगा। तब यह शाप तुम्हारे काम आयेगा। इससे तुम्हारी भलाई ही होगी। उस वर्ष की पूर्ति के साथ-साथ ऊर्वशी के शाप का प्रभाव भी नहीं रह जायेगा।''

इंद्र की बातों से संतृप्त अर्जुन चित्रसेन के साथ स्वर्गलोक में निश्चिंत रूप से घूमने-फिरने लगा।

अचूक चिकित्सा

हेलापुर की हेमलता संपन्न स्त्री थी। अपने तीनों बेटों की शादी के पहले दोनों नौकरों से खूब काम करवाती थी। वह चुप बैठ नहीं पाती थी। इसलिए रसोई के कामों में, पिछवाड़े में तरकारियों के पौधों को सींचने के कामों में अपने से जितना हो सके, उनकी मदद करती रहती थी। पर जब बेटों की शादी हो गयी और तीनों बहुएँ परिवार बसाने ससुराल आ गयीं तो उसने उन नौकरों को काम से निकाल दिया। सब काम अपनी बहुओं से ही कराने लगी और आराम से कुर्सी में बैठकर गुनगुनाती रहती या कोई भक्ति-गीत आलापती रहती थी।

यों कुछ समय बीत गया। आराम से बैठे रहने के कारण, कोई काम न करने की वजह से वह मोटी हो गयी। अब वह इस स्थिति पर पहुँच गयी कि खाये तो हजम नहीं होता, न खाये तो कमज़ोरी महसूस करने लगी। जब वह वैद्यों के पास गयी तो कुछ वैद्यों ने उसे सलाह दी कि वह खाये कम। तो कुछ वैद्यों ने उससे कहा कि घर से आधे कोस की दूरी पर स्थित देवी के मंदिर, एक बार सुबह-शाम आती-जाती रहे। उन्होंने कुछ दवाएँ भी दीं। उसका पति जयंत घर के काम-काजों और पिछवाड़े के बाग़ के कामों में अपनी बहुओं की मदद.करता रहता था।

हेमलता में इतनी सहनशक्ति नहीं थी कि वह रोज सुबह-शाम देवी के मंदिर तक आ-जाया करे। पति उससे बारंबार कहता रहता था कि घर के कामों में बहुओं का साथ दो। किन्तु उसका विचार था कि ऐसा करने से वह बहुओं के सामने अपमानित होगी; अपनी आधिक्यता जता नहीं पायेगी; बहुओं की दृष्टि में उसका मूल्य घट जायेगा।

इन परिस्थितियों में उसे मालूम हुआ कि सुगंधपुर में एक वैद्य है, जो अपनी दवाओं से मोटापन दूर करता है। वह उसके पास गयी। उसने हेमलता से सौ रुपये लिये और सौ गोलियों की एक शीशी उसे दी।

हेमलता ने पूछा कि हर रोज़ कितनी गोलियाँ खाऊँ? वैद्य ने कहा "इन गोलियों को मुँह में डालना नहीं चाहिये। उन्हें हर दिन छे बार नीचे गिराती रहो और शीशी को ऊँचे मेज़ पर रखकर एक-एक करके उन सौ गोलियों को शीशी में डालती जाओ।"

- मनमोहन

'चन्दामामा'
परिशिष्ट - ९६

हमारे देश
के वृक्ष

चमेल

चंपक वृक्ष हमारे देश में 'आलय वृक्ष' के नाम से सुप्रसिद्ध है। यह मेक्सिको से इतर देशों में व्याप्त हुआ। हिन्दू ही नहीं बल्कि मुसलमान और बौद्ध भी इसे पूजनीय मानते हैं। मंदिरों और मसजिदों में यह अधिक पाया जाता है। मुसलमान इसे क़ब्रों के पास बोते हैं और अच्छी तरह से देखभाल करते हैं। इसलिए यह 'मृतों का वृक्ष' भी कहा जाता है।

हिन्दी में इसे 'चमेल', 'गुल-ए-चिन', मराठी में 'खैर चंपा', गुजराती में 'धोलो चंपा', बंगाली में 'दलमा पूला', ओरिया में 'गोलोची', तमिल में 'इलत्तलरी' मलयालम में 'अरलि', 'वेल्ल चंपका' तेलुगु में 'चंपक' व 'अर्हत गन्नेरु' भी कहते हैं।

ये वृक्ष छे मीटर की ऊँचाई तक पनपते हैं। टहनियाँ मज़बूत होती हैं। ये चारों ओर फैली हुई होती हैं। जब पत्ते नहीं होते तब टहनियों के सिरे मोटे दिखायी देते हैं। लगभग ३० सें.मी. के चौड़े पत्ते टहनियों के सिरे में घने होते हैं। बीच से शुरु होनेवाली सींके समांतर होती हैं। अन्य वृक्षों की तरह शीतकाल में इसके पत्ते झड़ते हैं।

पुष्प-दल आरंभ में पीले, सफ़ेद और अंत में लाल व कोमल लाल रंग में तरह-तरह से दिखायी देते हैं। पुष्पों में सुगंधि होती है। फ़रवरी से अक्तूबर तक खिलते हैं।

जड़ों सहित उखाड़ने के बाद भी चमेलों में फूल खिलते हैं। इसलिए इसका दूसरा भी नाम है 'जीवनवृक्ष'।

हमारे देश के ऋषि

जाजिलि

भयंकर अरण्य में जाजिलि नामक एक मुनि तपस्या करते थे। वहाँ जा पाना किसी साधारण मनुष्य के लिए असंभव था। उन्होंने वैराग्य अपनाकर इंद्रियों पर वश प्राप्त कर लिया। वृक्ष की छाल से शरीर को ढ़क लिया और वर्षा, धूप, सर्दी का सामना करते हुए घोर तपस्या की। आखिर उन्होंने खाना-पीना भी त्यज दिया। सूर्यरश्मि व वायु से उन्हें पर्याप्त जीवशक्ति प्राप्त होती थी। वे तपस्या में ध्यान-मग्न हो जाएँ तो तूफ़ान भी उन्हें हिला नहीं पाता था।

एक दिन जाजिलि तपस्या से उठे और उदयभानु की ओर देखने लगे। उस समय दो पक्षी उड़ते हुए वहाँ आये और उन्हें पेड़ समझकर उनके सिर पर आकर बैठ गये। जाजिलि नहीं चाहते थे कि पक्षियों को उनकी वजह से कोई परेशानी हो। वे जैसे के तैसे खड़े ही रह गये। थोड़ी देर बाद उनकी जटाओं को घोंसला समझकर एक पक्षी ने वहीं अंडे दिये। मुनि न हिले न डुले, वैसे ही खड़े रह गये।

थोड़े दिनों के बाद अंडे फूटे और कुछ ही दिनों में शिशु पक्षियों ने अपने पंखों की सहायता से उड़ना सीखा। माँ पक्षी उनके लिए आहार लाया करती थी। जाजिलि यह सब कुछ चुपचाप सहते रहे। एक दिन वे सब के सब पक्षी उड़कर कहीं चले गये। जाजिली नहीं चाहते थे कि सायंकाल वापस आने पर उन्हें वहाँ न पायें तो वे घबरा जायें, अपने को निराश्रित न समझें। इसलिए वे वहीं उसी मुद्रा में खड़े ही रहे। बहुत समय के बाद भी वे पक्षी नहीं लौटे तो उन्होंने समझ लिया कि वे कहीं और निवास कर रहे हैं। फिर वे समुद्र में स्नान करने गये। स्नान करते-करते उन्होंने सोचा "पक्षियों के लिए मैंने कितना श्रम किया। मैं सचमुच ही उत्तम तपस्वी हूँ।" यों सोचते-सोचते मन ही मन वे प्रसन्न होते रहे। तब उन्होंने सुना "अगर तुम इतने उत्तम तपस्वी हो तो वाराणसी के व्यापारी तुलाधर के बारे में क्या कहना होगा?"

यह सुनकर जाजिलि आश्चर्य में डूब गये और तुलाधर से मिलने वाराणसी गये। उससे मिलने के बाद जाजिलि को मालूम हुआ कि तुलाधर अपने बड़े परिवार को कैसे संभाल रहा है और अपने बंधुओं व मित्रों की भरसक कितनी सहायता कर रहा है। अहंकार व स्वार्थ से दूर, अति निराडंबर जीवन व्यतीत करनेवाले तुलाधर को देखने के बाद जाजिलि का अहंकार टूट गया। उन्हें अब मालूम हुआ कि अपने को महातपस्वी समझना उनकी भूल है। उन्होंने उससे चर्चाएँ कीं। वेदांत के रहस्यों को जाना। जाजिलि अब विनयशील बन गये।

क्या तुम जानते हो?

१. मुसलमानों का पवित्र ग्रंथ क्या है?

२. 'बुल फैटिंग' किस देश की प्रसिद्ध क्रीडा है?

३. रोगी के दिल की धड़कन के वेग को सुनने के लिए डाक्टर किस साधन का इश्तेमाल करते हैं?

४. जलचरों की प्रदर्शनशाला को अंग्रेज़ी में क्या कहते हैं?

५. हमारे देश में मत देने के लिए क्या आयु निर्धारित है?

६. नाखूनों को काटने से दर्द नहीं होता। क्यों?

७. किस देश में सोना अधिक मिलता है?

८. दुनिया की सबसे अधिक आबादीवाला देश कौन-सा है?

९. आइना मुख्यतया किस पदार्थ से बनता है?

१०. भूमि के वातावरण, भूसार, वृक्ष, मनुष्य आदि के बारे में अध्ययन करनेवाले शास्त्र का क्या नाम है?

११. भूमि के ऊपरी परत के नीचे हठात् होनेवाले कंपन को क्या कहते हैं ?

१२. किस देश की प्रजा को 'किविस' कहते हैं?

१३. वे प्रथम मनुष्य कौन हैं, जिन्होंने चाँद पर क़दम रखा?

१४. पर्शिया का आधुनिक नाम क्या है?

१५. घोंघा कब तक सोया रह सकता है?

उत्तर

१. कुरान
२. स्पैन, मेक्सिको
३. स्तेथस्कोप
४. अक्वेरियं
५. अठारह साल
६. नाखूनों में नसें नहीं हैं
७. दक्षिण अफ्रीका
८. चीन
९. रेत
१०. भूगोलशास्त्र
११. भूकंप
१२. नील आर्मस्ट्रांग
एडिविन अल्विन
१३. न्यूजलांड
१४. इरान
१५. तीन साल

सुवर्ण रेखाएँ संख्या ५ के उत्तर
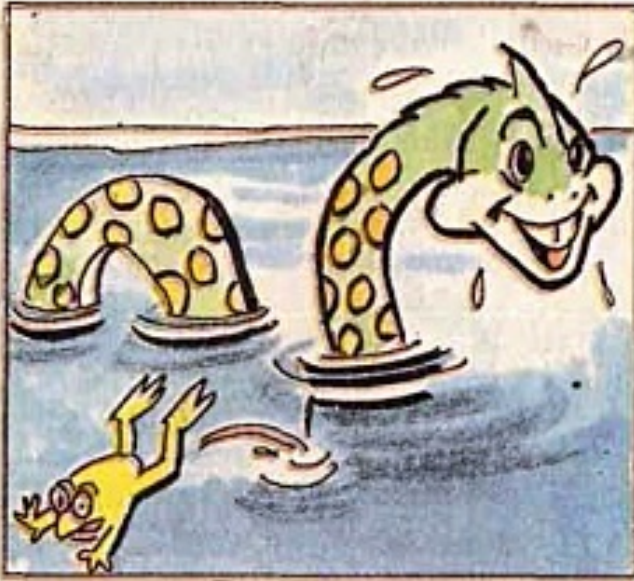
४. पोला है। सच कहा जाए तो पक्षी के पंखों से हल्के होते हैं उसकी हड्डियाँ।

५. सात हड्डियाँ मात्र

६. किंगकांग

७. शुतुरमुर्ग। साधारण शुतुरमुर्ग के अंडे का वज़न १.६ कि.ग्रा है।

१ 'नेस्पी' लाचनेस भयंकर मृग

२. टिबेटियों ने इसे 'यति' कहा। पाश्चात्यों ने इसे 'बहुत बुरा बरफ़ का मनुष्य' कहा।

८. बिना तैरे नहीं रह सकतीं। अन्य मछलियों की तरह पानी पर तैरने के लिए इनमें क्लोम नहीं होता। तैरना बंद कर दें तो डूब जाएँगी। इसलिए सोते समय भी इन्हें तैरना ही पड़ता है।

३. बेर्मूडा ट्रयांगिल। इसे डेविल ट्रयांगिल भी कहते हैं।

असली भूल | बड़ा आखेट

इतिहास के पूर्व युग के मनुष्य का, डैनोजर का शिकार करना असंभव है। क्योंकि मानव के जन्म के पहले ही डैनोजर मिट गये।

भूतनी का संतान-प्रेम

गंधार की इकलौती संतान थी लक्ष्मी। उसकी माँ बचपन में ही गुज़र गयी। इसलिए बाप-बेटी एक दूसरे की देखभाल करने लगे। लक्ष्मी का जीवन मज़े से कट रहा था, पर गंधार को सदा अपनी बेटी की फ़िक्र लगी रहती थी। उसकी कमाई जीविका चलाने मात्र के लिए पर्याप्त होती थी, इसलिए वह इस बात पर चिंताग्रस्त रहता था कि बेटी की शादी कैसे करूँ।

एक दिन जब वह सबेरे-सबेरे काम पर निकल रहा था, तब घर के मालिक ने गंधार से कहा "देखो, इस महीने से घर का किराया पच्चीस रुपये बढ़ा रहा हूँ। अगर तुम्हें पसंद न हो तो कोई और घर ढूँढ़ लो।" उसकी बातों में कड़ुवापन था।

इन बातों को सुनकर चिंतित अपने पिता से चौखट पर खड़ी लक्ष्मी ने कहा "मालूम नहीं, इस घर की छत किस पल टूटेगी और हमारे सिर पर आ गिरेगी। ऐसे घर उजड़े के लिए इतना किराया बहुत ज़्यादा है। छे महीनों के पहले ही किराया बढ़ाया और अब और बढ़ाने की धमकी दे रहा है।" बहुत ही नाराज़ होती हुई बोली।

लक्ष्मी की बातों से घर का मालिक एकदम भड़क उठा। उसने कहा "इतना अच्छा घर तुम्हें उजड़ा घर लगता है? तुम जैसी सुकुमारी के लिए उस रामी का भूत-गृह ही ठीक होगा। शाम तक घर खाली नहीं किया तो सामान सड़क पर फेंक दूँगा।" चिल्लाता हुआ घर के अंदर चला गया और ज़ोर से दरवाज़ा बंद कर लिया।

नित्सहाय गंधार ने बेटी से कहा "मुझे काम पर जाना है। बहुत देरी हो गयी। देखते हैं, शाम तक शायद घर का मालिक नरम पड़ जाए।" कहकर वह चला गया।

लक्ष्मी घर के अंदर जाकर खाट पर लेट

सुचित्रा

गयी और घर के मालिक के बताये रामी के भूत-गृह के बारे में गंभीर रूप से सोचने लगी। यहाँ से दो गलियों के उस ओर ही रामी का बड़ा आँगनवाला घर है। जब रामी जीवित थी, तब उस का नाम लेते ही लोग श्रद्धा से हाथ जोड़कर नमस्कार करते थे। किसी ने अपना दुखड़ा सुनाया तो वह उसे खाली हाथ नहीं लौटाती थी। ऐसे उदात्त गुणवाली रामी तीन सालों के पहले किसी बीमारी की वजह से मर गयी। उसका पति तो कभी का मर चुका था। उस घर में अब बचा है, केवल उसका इकलौता बेटा वेणु।

रामी जब मरी थी, तब उस घर में रसोइया व नौकर-चाकर भी थे। उसके मरने के छे महीनों के बाद इस ड़र से वे सब घर से भाग गये कि इस घर में रामी की प्रेतात्मा विचरती रहती है।

लक्ष्मी को ये सारी बातें मालूम थीं। इसलिए सोचने-विचारने के बाद वह इस निर्णय पर आयी कि शाम तक घर खाली कर दूँगी। उसने अपने आप कहा "इस निर्दयी घर के मालिक के भरोसे अब क्यों रहें। उससे खरी-खोटी बातें सुनने से तो अच्छा यही है कि रामी के घर ही जाएँ और वहीं रहें।"

लक्ष्मी जब रामी के घर पहुँची तो देखा कि एक युवक दरवाज़ा बंद करके ताला लगा रहा है। लक्ष्मी ने भाँप लिया कि यही वेणु होगा। उसने उसे प्रणाम किया और अपनी हालत को संक्षेप में बताते हुए कहा "मुझे भूत-प्रेतों का कोई विश्वास नहीं। थोड़े दिनों के लिए ही सही, हमें आप अपने घर में रहने देंगे तो आपकी मदद कभी नहीं भूलेंगे।"

उसकी बातों से मुग्ध वेणु ने कहा "आप इस घर में रहें, यही मेरे लिए बहुत कुछ
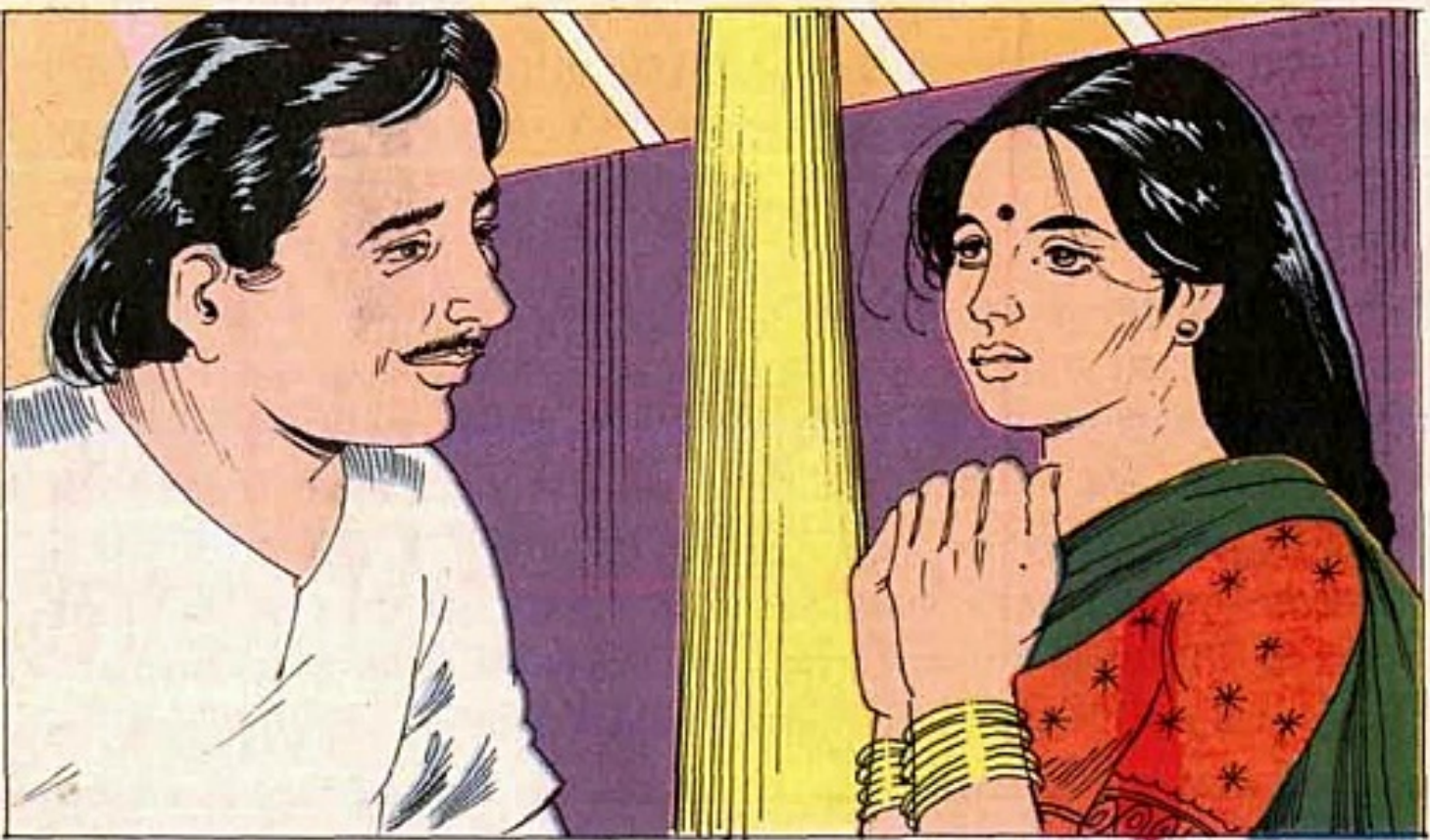
है। इसे अपना ही घर समझिये। दूसरों को मालूम हो जाए कि यह भूत-गृह नहीं, इससे बढ़कर खुशी मुझे और क्या हो सकती है।'' उसने ताला खोला वेणु के जाने के बाद लक्ष्मी ने पूरा घर देखा। झाड़ू देकर पूरा घर साफ़ किया। फिर उसने ताला लगाया और जाने-पहचाने रंगा की गाड़ी में अपना पूरा सामान लदवाकर ले आयी।

घर लौटे गंधार को जब यह सब मालूम हुआ तो उसने रामी के घर जाकर दरवाजा खटखटाया। दरवाज़ा खोलकर जब लक्ष्मी ने देखा कि उसके पिता बहुत नाराज़ हैं, तो उसने कहा ''पिताजी, नाराज़ न होना इस बात पर कि आपसे पूछे बिना मैंने घर बदल दिया। आप ही कहिये, घर के मालिक का व्यवहार सही था? उसकी बातों में कितनी कठोरता थी। इतना अपमानित होने के बाद भी भला हम कैसे रहें उस घर में। आप भूत-प्रेतों की बात को लेकर डरिये मत! हमारे लायक़ जब कोई घर मिल जायेगा तो चले जाएँगे।'' उसने वेणु के बारे में भी बताया। उस दिन रात को वेणु ने बाप-बेटी के साथ खाना खाते हुए लक्ष्मी की रसोई की भरपूर प्रशंसा की।

पूरा दिन लक्ष्मी ने घर साफ़ किया और सजाया। घर के विशाल आँगन में जो कूड़ा-करकट था, फेंका और साफ़ किया। अंधेरा हो जाने के बाद चूल्हा जलाया और रसोई के काम में लग गयी।

जब रसोई का काम पूरा ही होनेवाला था कि उसने आवाज़ सुनी ''अब तुमसे बातें किये बिना चुप नहीं रह सकती।''

लक्ष्मी चौंक पड़ी और पलटी तो देखा कि बगल में ही एक पाटे पर भूतनी बैठी हुई है। उसके चेहरे पर हँसी है। लक्ष्मी ने ठान लिया कि यह और कोई नहीं, रामी ही

है तो उसने भी हँसकर कहा ''सास, बताओ तो सही, जब ज़िन्दा थी, तब बहुत ही नेक स्वभाव की थी। मरने के बाद भूतनी कैसे बन गयी? देखा न, तुम्हारे मरने के बाद इतने बड़े घर में तुम्हारा बेटा वेणु अकेले ही रह रहा है।''

रामी ने लंबी साँस खींचते हुए कहा ''वेणु जब से जवान बन गया तब से उसकी शादी जल्दी कराने की मेरी तड़प थी। वह बहुत समय तक टालमटोल करता रहा। इस बीच मैं मर गयी। उसकी शादी को देखने की मेरी तीव्र इच्छा थी, पर वह पूरी नहीं हो सकी। इस असंतृप्ति से मैं भूतनी बन गयी। हर रोज़ आधी रात को घर के अंदर जाती हूँ और अपने बेटे को जी भरके देख लेती हूँ। मैं रसोइये और नौकर-चाकरों पर निग़रानी रखती थी कि वे उसकी सुविधाओं का ठीक तरह से ख्याल रख रहे हैं या नहीं। धीरे-धीरे नौकरों के बरताव में तब्दीली आ गयी।

एक दिन मेरा बेटा बुखार से पीडित था। वह खाट पर बेहोशी की हालत में पड़ा हुआ था। सब नौकरों ने मिलकर षड्यंत्र रचा और एक बोरा चावल रसोई-घर के पिछवाड़े से बाहर ले जाकर बेचने का प्रयत्न कर रहे थे। मुझसे यह देखा न गया। मैं उनपर कूद पड़ी और बोरा छीन लिया। मैं चिल्ला पड़ी ''अरे कृतघ्नो, मैं रामी हूँ, तुम्हारी मालिकिन हूँ। उपकार करने के बदले अपकार करने पर तुल गये? ऐसी कृतघ्नता? फिर कभी ऐसे बुरे काम करने की चेष्टा करोगे तो मैं तुम लोगों का गला घोटं दूँगी। बस भूत, भूत कहते हुए भाग गये। अब तुम्हीं बताओ, इसमें क्या मेरी कोई ग़लती है?'' लक्ष्मी उत्तर में कुछ कहने ही वाली थी कि दरवाज़ा के खुलने की आवाज़ आयी। रामी भूतनी फ़ौरन खिड़की से उड़कर ग़ायब हो गयी।

इसके बाद पाँचवें दिन की रात को गंधार जब आया और कहा ''हमें घर मिल गया। कल सबेरे ही चले जाएँगे।'' यह बात सुनते ही वेणु का चेहरा कांतिहीन हो गया। वह भला उनसे कैसे कहे कि भूत-गृह के नाम से मशहूर इस घर में रहिये। उसे लगा कि उनको मनाना भी न्यायोचित नहीं है। वह मौन रह गया।

गंधार नहाने पिछवाड़े के कुएँ के पास

गया तो इमली के पेड़ से धडाम् से भूतनी बिल्कुल उसके सामने कूदी। भूतनी को देखते ही गंधार सिकुड गया, उसके मुँह से बात न निकली और वह थर-थर काँपते हुए बैठ गया।

भूतनी भी बिल्कुल उसके सामने ही बैठकर बोली "गंधार, मैंने तुम्हारे लिए जो-जो किया, सब भूल गये? याद है वह दिन जब कर्ज़ चुकाने के लिए तुम्हारी मदद करने कोई आगे नहीं बढ़ा, तो तुम्हें मैंने कर्ज़ दिया और साहुकार के चंगुल से बचाया। तुम डरो मत। ध्यान से मेरी बात सुनो।" फिर उसने लक्ष्मी को अपनी जो सच्ची कहानी सुनायी, दुहराया। फिर उसने कहा "मैंने सुन लिया कि तुम दोनों कल सबेरे इस घर को छोड़कर जानेवाले हो। तुम्हारे इस घर में आने के बाद मेरा बेटा वेणु बहुत खुश है। मैं चाहती हूँ कि अपनी बेटी की शादी उससे करावो और उसके आनंद को शाश्वत बनाओ। मेरी दिली इच्छा पूरी होगी तो इस घर को छोड़कर मैं सदा के लिए चली जाऊँगी। मेरी बात का विश्वास करो। विश्वास पर ही यह दुनिया टिकी है।"

भूतनी की बातों से गंधार का हृदय पसीज उठा। उसे भूतनी की बातें सही और सच्ची लगीं। उसने कहा "मैं तुम्हारा ऋणी हूँ। दीदी, वही होगा जो तुम चाहती हो।" यह सुनते ही भूतनी ने कहा "तुम्हारी बातों से ऐसा लगता है मानों मैंने विवाह-भोजन कर लिया।" कहकर वह हवा में समा गयी।

बिना नहाये ही गंधार जल्दी-जल्दी घर के अंदर आया और निराश बैठे वेणु से सहर्ष कहा "बेटे, लगता है, हमारा यहाँ से चले जाना तुम्हें पसंद नहीं। मेरी लक्ष्मी का इसी घर में हमेशा के लिए रह जाना तुम्हें पसंद हो तो कह दो। उसे तुम्हें सौंपकर आराम की साँस लूँगा और यहाँ से चला जाऊँगा।"

वेणु की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने गंधार के हाथ पकड़कर कहा "मैं सचमुच कितना भाग्यवान हूँ। ससुरजी, आप भला कहीं और क्यों जाएँ? तीनों मिलकर साथ-साथ रहेंगे।"

वहीं खड़ी लक्ष्मी ने उनकी बातें सुनीं और शरम के मारे सिर झुकाकर बगल के कमरे में चली गयी।

माँ की ममता

मोती एक ग़रीब विधवा माँ का बेटा था। माँ ने उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला। मेहनत की अपनी कमाई से उसने अपने बेटे को प्यार से पाला-पोसा। मोती खाता और अपने दोस्तों के साथ खेलता रहता था। अलावा इसके, वह कोई दूसरा काम करता ही नहीं था।

किन्तु मोती ने एक सत्य जाना। उसने जाना कि उसकी उम्र के सब लड़के अपने से जो हो सके, काम-काज करते हैं और अपने माँ-बाप की भरसक मदद करते हैं। मोती ने भी सोचा कि अपनी माँ की मदद क्यों न करूँ। पर उसकी माँ को यह पसंद नहीं था। वह नहीं चाहती थी कि उसका बेटा मेहनत करे। इसलिए किसी और गाँव में जाकर उसने काम करना चाहा। माँ को बिना बताये वह गाँव से चला गया।

लंबे सफ़र के बाद वह एक गाँव में पहुँचा। उसे उस गाँव के एक धनिक के यहाँ काम मिला। एक साल काम करने के बाद उसे माँ को देखने की इच्छा हुई। उसने अपनी इच्छा ज़ाहिर की तो धनिक ने उसे एक चाँदी का साँचा भेंट में दिया और कहा कि सावधानी से इसे घर ले जाओ। मोती के कार्य-काल में धनिक के घर दो शादियाँ हुईं। तब उसने अपने नौकरों को भेंटें दीं और थोड़ा-बहुत धन भी दिया। मोती ने इस एक साल में वेतन भी नहीं लिया। इसी कारण उसे अब इतनी चाँदी मिली। उसने अपने दुपट्टे में उसे बाँध लिया, कंधे पर डाला और बड़े ही उत्साह के साथ गाँव की तरफ़ निकला। चलते-चलते मोती को लगा कि चाँदी की गठरी का भार बढ़ता जा रहा है। उस वज़न के कारण वह जल्दी-जल्दी चल नहीं पा रहा था।

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

थोड़ी देर जाने के बाद उसने देखा कि एक घुड़सवार सामने से आ रहा है। मोती को लगा कि उसके पास भी ऐसा घोड़ा होता तो वह माँ के पास जल्दी पहुँच पाता। उसने घुड़सवार से पूछा "ऐसे घोड़े की क्या क़ीमत होगी ?"

"घोड़ा खरीदने के लिए तुम्हारे पास है ही क्या ?" घुड़सवार ने लापरवाही से पूछा।

मोती ने उसे चाँदी दिखायी। यह चाँदी लेकर अपना घोड़ा देने के लिए वह तैयार हो गया। मोती ने अपनी चाँदी उसे दे दी और उसकी सहायता से घोड़े पर चढ़ बैठा।

मोती जैसे ही बैठ गया, घोड़ा तेज़ी से दौड़ने लगा। उसे वह अपने काबू में न ले आ सका। वह जिस दिशा में जाना चाहता था, जा नहीं पाया।

घोड़ा जब तेज़ी से दौड़ता हुआ जाने लगा तो एक पशुपालक ने देखा कि मोती से उसे रोकना संभव नहीं हो पा रहा है। पशुपालक लकड़ी लेकर घोड़े के सामने खड़ा हो गया और घोड़े को रोकने की कोशिश की। उसकी कोशिश कामयाब हुई। घोड़ा रुक गया। किन्तु रुक जाने के पहले वह हठात् पीछे के पैरों पर खड़ा हो गया और मोती को गिरा दिया।

पशुपालक ने मोती को उठाया और कहा "बालिश्त भर नहीं हो। क्यों घोड़े पर सवार हो गये? बताओ तो सही, यह घोड़ा तुम्हें मिला कैसे? कहीं चोरी तो नहीं की?"

मोती ने अपनी कथा पशुपालक से बतायी। तब उसने मोती से कहा "तुमसे बड़ी भूल हो गयी। क्या तुम्हारी माँ इस घोड़े को देखकर खुश होगी ? आख़िर उसे किस बात पर खुशी हो सकती है? इससे अच्छा होता, तुम एक गाय खरीद लेते। वह दूध देती और इससे तुम्हारी माँ खुश होती। अब भी समय है, यह घोड़ा मुझे दे दो और एक गाय ले जाओ। तुम्हारी माँ तुमसे बहुत खुश होगी।"

उसकी बातें सुनकर मोती स्वप्न-जगत में चला गया, जिसमें उसने देखा कि गाय ने बछड़े दिये और उसके पास अब बहुत-सी गायें हैं। पशुपालक का प्रस्ताव उसे सही लगा। उसने घोड़ा दिया और गाय ले ली। किन्तु उस पशुपालक ने उसे बूढ़ी

सूखी गाय दी और धोखा दिया ।

गाय को हाँकता हुआ मोती अपने गाँव की ओर जाने लगा । दुपहर हो गयी । उसके पेट में भूख से चूहे दौड़ने लगे । उसने सोचा कि शाम हो जाए तो दूध दुहूँगा और पीऊँगा तो भूख मिट जायेगी ।

सूर्यास्त तक वह एक ऐसी जगह पर पहुँचा, जहाँ बकरियों का झुंड था । उसने बकरियों के चरवाहे से लोटा लिया और गाय को दुहने की कोशिश की । दूध तो निकला नहीं, उल्टे गाय ने लात मारी ।

यह सब देखते हुए वह चरवाहा हँस पड़ा और कहा "यह तो बूढ़ी गाय है । भला वह दूध क्यों देगी? कहाँ से पाया है इसे?"

मोती ने उसे अपनी कहानी सुनायी ।

"एकदम भोले हो तुम । लड़के हो ना, इसलिए उसने तुम्हें धोखा दिया । इस गाय को मेरे हवाले कर दो । इसकी जगह पर दूध देनेवाली एक बकरी ले जाओ । बहुत ही जल्दी कई बकरियाँ तुम्हारे पास होंगीं ।"

जिस बकरी को देने का उसने वादा किया था, उसे खुद दुहा और उसका दूध मोती को दिया । मोती खुश होता हुआ बकरी को ले अपने गाँव की तरफ़ बढ़ा ।

थोड़ी देर बाद बकरी, मोती के साथ आने से इनकार कर रही थी और पीछे घूमकर जाने लगी । वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने भी लगी । उसे अपने साथ ले जाने के उसके सारे प्रयत्न बेकार हुए ।

इतने में वहाँ एक आदमी आया । उसके पास एक मुर्गा था । मोती की हालत देखकर दया दिखाते हुए उसने पूछा "क्यों ज़बर्दस्ती कर रहे हो? क्या यह तुम्हारी बकरी नहीं है? इसे कहाँ ले जा रहे हो?"

मोती ने उस आदमी को आप बीती सुनायी।

तब उस मुर्गेवाले ने कहा "तुम्हारा गाँव बहुत दूर है। ज़बरदस्ती करके वहाँ तक इस बकरी को ले जाना तुम्हारे बस की बात नहीं है। मेरी बात सुनो। इसे मुझे दे दो और यह मुर्गा ले जाओ। यह हर रोज़ तुम्हें दस अंडे देगा। देखते-देखते तुम्हारा घर मुर्गे-मुर्गियों से भर जायेगा। तुम्हारी माँ बहुत खुश होगी।"

मोती को उसकी सलाह सही लगी। मोती को मालूम नहीं था कि वह मुर्गा है और मुर्गा अंडे नहीं देता। बकरी की बला से वह बचना चाहता था, इसलिए बकरी उसे सौंपकर मुर्गा ले लिया।

कुछ देर जाने के बाद मोती ने देखा कि एक आदमी के सामने बहुत-से चाकू हैं। वह एक-एक करके सान पर चढ़ा रहा है। मोती ने उसे ऐसा करते हुए देखकर पूछा "क्यों ऐसा कर रहे हो?"

"चाकुओं को सान पर चढ़ा रहा हूँ। इससे उनमें पैनापन आता है। हर एक चाकू को सान पर चढ़ाने से एक रुपया मिलेगा।" सिकलीगर ने कहा।

"मेरे पास भी ऐसा खड़सान होता तो कितना अच्छा होता" मोती ने कहा। सिकलीगर ने कहा "मेरे पास एक और खड़सान है। चाहो तो बेचूँगा।"

"खरीदने के लिए मेरे पास इस मुर्गे के सिवा और कुछ नहीं।" मोती ने कहा।

"ठीक है, वही सही, दे दो मुझे" कहते हुए उसने मुर्गा लिया और खड़सान मोती को दिया।

मोती उसे लेकर अपना गाँव पहुँचा। उसने अपनी माँ से धनिक के दिये हुए चाँदी के साँचे से लेकर खड़सान तक कैसे बदलता आया, पूरा-पूरा बताया।

"पगले कहीं के, चाँदी खो दी और इस बेकार पथ्थर को ले आये। चाँदी जो गयी, सो गयी। मुझे इसका कोई रंज नहीं। कम से कम तुम सुरक्षित लौट आये, यही मेरे लिए बहुत है" माँ ने कहा।

उसके बाद उसने अपने बेटे को काम पर जाने दिया। मोती मेहनती था, इसलिए माँ से ज़्यादा कमाया और माँ को सुखी व संतुष्ट रखा।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, जनवरी, १९९७ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

S.G. Seshagiri

S.G. Seshagiri

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ २० नवम्बर, '९६ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

सितंबर, १९९६, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **पहले नाव की सफ़ाई**

दूसरा फोटो : **फिर कपड़ों की धुलाई**

प्रेषक : **श्रीमती प्रफुल्लता शेंडे**

ख्रिस्तानंद स्कूल, ब्रह्मपुरी, (जिला-चंद्रपुर) पि-४४१ २०६, महाराष्ट्र

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process private Ltd., 188, N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.